आधिकारिक विवरणिका

THE OFFICIAL CATALOGUE
शैतन्य प्रसाद (अतिरिक्त महानिदेशक, डीएफएफ)
Chaitanya Prasad (Additional Director General, DFF)
तनु राय (उप निदेशक, एनएफए)
Tanu Rai (Deputy Director, NFA)

सम्पादक: शंभु साहु (अंग्रेजी), पंकज रामेंदु (हिंदी)
Editors: Shambhu Sahu (English), Pankaj Ramendu (Hindi)

सहयोग: कौशल्या मेहरा, अरविंद कुमार, कमलेश कुमार रावत
Assisted by: Kaushalya Mehra, Arvind Kumar, Kamlesh Kumar Rawat

संयोजन: सरवत जबीन, जोलीन व्ह्लेयर लंगु, रूद्र प्रताप सिंह, गीतेश कुमार
Co-ordination: Sarwat Jabin, Jolynn Clair Langhu, Rudra Pratap Singh, Geetesh Kumar

डिज़ाइन: निर्माण एडवर्टेंटिजिंग प्रा. लि.
Design: Nirman Advertising Pvt. Ltd.

कला निदेशक: मुकेश चंद्र
Creative Director: Mukesh Chandra

कला सहायक: पवन यादव
Creative Assistance: Pawan Yadav

प्रकाशक: वि.दू. प्र.नि., सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
Publisher: DAVP, Ministry of Information and Broadcasting

© Directorate of Film Festivals, Ministry of Information and Broadcasting, Government of India except the film related material.
CONTENTS

DADASAHEB PHALKE AWARD

About Dadasaheb Phalke Award 69
Dadasaheb Phalke Award Past Recipients 13
Award Committee 18
Amitabh Bachchan - Profile 23
Feature Film Jury 28
Non-Feature Film Jury 34
Best Writing on Cinema Jury 38
Regional Feature Film Jury 40
Film Friendly State Jury Committee 45

FEATURE FILMS

Feature Films - At a Glance 48
Best Feature Film 50
Indira Gandhi Award for Best Debut Film of a Director 52
Award for Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment 54
Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration 56
Best Film on Social Issues 58
Best Film on Environment Conservation/Preservation 60
Best Children's Film 62
Best Gujarati Film 64
Best Punjabi Film 66
Best Assamese Film 68
Best Konkani Film 70
Best Kannada Film 72
Best Telugu Film 74
Best Malayalam Film 76
Best Bengali Film 78
Best Urdu Film 80
Best Hindi Film 82
Best Tamil Film 84
Best Marathi Film 86
Best Garo Film 88
Best Sherdukpan Film 90
Best Pangchenpa Film 92
Best Rajasthani Film 94
<table>
<thead>
<tr>
<th>CONTENTS</th>
<th>FEATURE FILMS</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ निर्देशन</td>
<td>96</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (मादा)</td>
<td>97</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री</td>
<td>99</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेता</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेत्री</td>
<td>101</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार</td>
<td>102</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायक</td>
<td>103</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका</td>
<td>107</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ छायांकन</td>
<td>108</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ पटकथा (नीलिक)</td>
<td>109</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ पटकथा (फांसीप)</td>
<td>110</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ पटकथा (संगीत)</td>
<td>111</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन (लोकसंग साउंड)</td>
<td>112</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन (साउंड इंजीनियर)</td>
<td>113</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन</td>
<td>114</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ समयांकन</td>
<td>115</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन हिडाईन</td>
<td>116</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ वेयर्लूक्स डिजाइनर</td>
<td>117</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ फूटफ्यूज कलाकार</td>
<td>118</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (संगीत)</td>
<td>119</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (भाषाएँ)</td>
<td>120</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ गीत</td>
<td>121</td>
</tr>
<tr>
<td>निर्माण कंट्रोलर का विशेष पुरस्कार</td>
<td>122</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ स्पेशल इफेक्ट्स</td>
<td>124</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ नृत्य संगीत</td>
<td>126</td>
</tr>
<tr>
<td>सर्वश्रेष्ठ एक्शन निर्देशन पुरस्कार</td>
<td>127</td>
</tr>
<tr>
<td>विशेष उल्लेख क्षेत्र</td>
<td>128</td>
</tr>
<tr>
<td>सार्वजनिक सूची</td>
<td>129</td>
</tr>
</tbody>
</table>
## विषय सूची

### CONTENTS

### गैर फीचर फिल्में

<table>
<thead>
<tr>
<th>नंबर</th>
<th>उपलब्धता</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>140</td>
<td>Non-Feature Films - At a Glance</td>
</tr>
<tr>
<td>142</td>
<td>Best Non-Feature Film</td>
</tr>
<tr>
<td>144</td>
<td>निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ फिल्म</td>
</tr>
<tr>
<td>146</td>
<td>Best Debut Non-Feature Film Of A Director</td>
</tr>
<tr>
<td>148</td>
<td>सार्वजनिक स्नेह से सर्वश्रेष्ठ फिल्म</td>
</tr>
<tr>
<td>150</td>
<td>Best Arts and Culture Film</td>
</tr>
<tr>
<td>152</td>
<td>बेस्ट सार्वजनिक मूल्य पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म</td>
</tr>
<tr>
<td>154</td>
<td>Best Science &amp; Technology Film</td>
</tr>
<tr>
<td>156</td>
<td>बेस्ट प्रोमोशन फिल्म</td>
</tr>
<tr>
<td>158</td>
<td>बेस्ट पारावर्तन फिल्म</td>
</tr>
<tr>
<td>160</td>
<td>Best Film on Social Issues</td>
</tr>
<tr>
<td>162</td>
<td>बेस्ट शौकियत फिल्म</td>
</tr>
<tr>
<td>164</td>
<td>Best Film on Sports</td>
</tr>
<tr>
<td>166</td>
<td>बेस्ट विश्लेषण फिल्म</td>
</tr>
<tr>
<td>168</td>
<td>बेस्ट विश्लेषण - विश्लेषण</td>
</tr>
<tr>
<td>170</td>
<td>बेस्ट निर्देशन</td>
</tr>
<tr>
<td>171</td>
<td>Best Cinematography</td>
</tr>
<tr>
<td>172</td>
<td>बेस्ट आर्टिफिकल रिकॉर्डिस्ट</td>
</tr>
<tr>
<td>173</td>
<td>Best Environment Film</td>
</tr>
<tr>
<td>174</td>
<td>बेस्ट ऐड्युकेशन</td>
</tr>
<tr>
<td>175</td>
<td>बेस्ट एडिटिंग</td>
</tr>
<tr>
<td>176</td>
<td>बेस्ट डिज़ाइन</td>
</tr>
<tr>
<td>177</td>
<td>Special Mention</td>
</tr>
<tr>
<td>178</td>
<td>कथासार</td>
</tr>
</tbody>
</table>

### सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन

### BEST WRITING ON CINEMA

<table>
<thead>
<tr>
<th>नंबर</th>
<th>उपलब्धता</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>184</td>
<td>Best Book on Cinema</td>
</tr>
<tr>
<td>186</td>
<td>विशेष उल्लेख</td>
</tr>
<tr>
<td>187</td>
<td>बेस्ट फिल्म कर्मचारी</td>
</tr>
</tbody>
</table>

### फिल्म अनुकूल प्रदेश पुरस्कार

### FILM FRIENDLY STATE AWARD

<table>
<thead>
<tr>
<th>नंबर</th>
<th>उपलब्धता</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>191</td>
<td>Film-Friendly State Award</td>
</tr>
<tr>
<td>192</td>
<td>अनुकूल प्रदेश</td>
</tr>
<tr>
<td>193</td>
<td>सर्वश्रेष्ठ फिल्म अनुकूल राज्य</td>
</tr>
<tr>
<td>194</td>
<td>Most Film-Friendly State</td>
</tr>
</tbody>
</table>
The Dadasaheb Phalke Award is given to a film personality for his/her outstanding contribution to the growth and development of Indian Cinema. The Award comprises a Swarna Kamal, a cash Prize of ₹10,00,000/- (Rupees Ten Lakh) and a shawl. The award was instituted in 1969 by the government in honour of the father of Indian cinema, Dhundiraj Govind Phalke.
दादाशाहेब फाल्के पुरस्कार
dadasaheb phalke award

भारतीय चित्रनाट्य संस्थान के जनरल डिजिटल फाल्के या दादाशाहेब फाल्के (1870–1944) ने 1913 में भारत की पहली फीचर फिल्म राजा हरिश्चंद्र के द्वारा एक विलक्षण नवरूजनी फिल्मी जीवन की सुरूआत की। निर्मिता, निर्देशन और पटकथा लेखक के रूप में उन्होंने अपनी कंपनी हिन्दुस्तान फिल्म्स के द्वारा सिर्फ 15 सालों में 95 फीचर फिल्मों और 28 टाटु फिल्मों का निर्माण किया। उनकी महत्वपूर्ण फिल्मों में गंगा हिनी भरमसूर (1913), सांस्कृतिक सावित्री (1914), ललिता दादो (1917), श्री कृष्ण जयंती (1918) और कालिग्राम नरेन्द्र (1919) शामिल हैं।

तेजसे बदलता कैरियर, हाउस के सबसे और विदेश यातायात, 20वीं सदी के उर्ध्वाधर में एक पारिवारिक व्यक्ति के बजाए उन्हें 21वीं सदी के किशोर के ज्वादा नजदीक ले आते हैं। गुडुरा व्यवसाय में प्रवेश करने से पहले उन्होंने पोटोप्पकी हिंदी फिल्मों से अपना कार्य सुरु किया। फिल्म कला की शिक्षा प्रागैतिहासिक प्राप्त होने के बाद उन्हें एक जादूगर और मंच कलाकार भी बने। विज्ञापन राजा रवि दर्शन से प्रेरित होकर उन्होंने लीपोग्गेत्री और ओलियोग्राफी में दक्षता हासिल की। बाद में उन्होंने अपना प्रिंटिंग प्रेस स्थापित किया। आधुनिकतम प्रीडिओग्राफी और मघरीनी के बारे में जीवन से लेकर उन्होंने जर्मनी की यात्रा भी की। हालांकि अपने जीवन के साथ विदाय रहने पर उन्होंने गुडुरा व्यवसाय छोड़ दिया। एक मूर्ख फिल्म दि लाइफ ऑफ क्राइस्ट से गहरे रूप में प्रभावित होने पर उन्होंने फिल्म बनाने का निर्णय लिया। उन्होंने लंडन से एक कॉमेड, प्रिंटिंग मशीन, परस्परिंगटर और कच्चा माल खरीदा। उन्होंने उन्हीं पर फिल्म बनाने का क्रीसिड फाल्स भी किया। इसके बाद उन्होंने भारत की पहली फीचर फिल्म राजा हरिश्चंद्र बनायी। इस फिल्म को 1913 में बंबई के कोरोनेटन संस्थान में प्रदर्शित किया गया और उसे आपका सरकारी फील्ड ज विश्वस्तुप डे के कारण नवरूजकर विश्व और कच्चे माल का संकट पैदा हो गया था, किर भी उनका भारत वहां नहीं था। उन्होंने अंग्रेजी विश्वास, विश्वस्तुप, अंतरराष्ट्रीय और हास्य फिल्मों बनायीं। जब तक ही उन्होंने पांच व्यवसायियों की भागीदारी में एक फिल्म कंपनी हिन्दुस्तान फिल्म्स की स्थापना की, जिसमें एक फ्रेंच और प्रशिक्षक टैक्सीकार और अभिनेता भी थे। एक बार फिल्म या उनके भागीदारों के साथ संकट में फंस गए और उन्होंने कंपनीं छोड़ दी।

फाल्के ने नृत्य और फिल्मों का निर्देशन कार्य लेकिन ये अब अवरोध महसूल करने लगे थे। 1931 के बाद उन्हीं मुक्त फिल्मों स्वाक्षर करने के साथ प्रतिद्वंद्विता नहीं कर पा रही थी। उनकी अतिरिक्त फिल्मों में संगीत विध (1932) और सवार फिल्म गंगाकारण (1937) थी। 1944 में उनका देहांत हो गया। दादा साहब फाल्के ने फिल्मों की एक महत्वपूर्ण संरचना का संभवान किया। उन्होंने कई विवरणों और निर्देशिकाओं को डैला और ऐसी भारतीय फिल्म उद्योग की बुनियाद रखी जो आज विश्व में स्वर्णिम सफल और वैश्विक पूर्णिम फिल्म उद्योग है।

NATIONAL FILM AWARDS'18 | 011
Dhundiraj Govind Phalke or Dadasaheb Phalke (1870-1944) is regarded as the father of Indian cinema. He directed India’s first feature film, Raja Harishchandra, in 1913, flagging off a remarkably inventive career. A producer, director and screenwriter, he is believed to have made 95 feature films and 26 short films - a significant number - that his company Hindustan Films made in barely 15 years. His amazing body of films include Mohini Bhasmasur (1913), Satyavan Savitri (1914), Lanka Dahan (1917), Shri Krishna Janma (1918) and Kaliya Mardan (1919).

His rapid career switches, headstrong nature and trips abroad, more closely characterise a teenager in the 21st century, than a family man at the dawn of the 20th century. Starting out in a photography studio, he studied art, was a magician and stage performer, before joining the printing business. Inspired by the painter Raja Ravi Varma, Phalke specialised in lithographs and oleographs. Later, he started his own printing press, and even travelled to Germany to learn more about the latest technology and machinery. However, following a dispute with his partners, he quit the printing business. Greatly impressed by a silent film, The Life of Christ, he decided to make a film. He sailed London and bought a camera, printing machine, perforator and raw stock, and even got a crash course in film making. He soon made Raja Harishchandra, on a righteous king who sacrifices his family and kingdom to fulfill a vow and uphold the truth. India’s first feature film Raja Harishchandra was exhibited at Bombay’s Coronation Cinema in 1913, and was a grand success. Undeterred when World War I brought a severe financial and raw stock crunch, he made shorts, documentary features, educational, animation and comic films. Soon he established a film company, Hindustan Films, in partnership with five businessmen, with a studio, and trained technicians and actors. Again he ran into trouble with his partners and quit.

Phalke directed a few more films, but felt constrained. Moreover, his silent films were unable to cope with competition from the talkies after 1931. Among his last films were Setu Bandhan (1932) and a talkie, Gangavatara (1937). He died in 1944. Dadasaheb Phalke leaves behind a pioneer’s legacy, not only of his astonishing films, but a joyous inventiveness, and a resilient, unbowed spirit that weathered many reverses and personal tragedies. Little did he know then that he was laying the foundation for the Indian film industry, today the most prolific and diverse in the world.
पूर्ववर्ती दादासाहेब फाल्के पुरस्कार विजेता
DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS

01. देविका रानी रोरिच
Devika Rani Roerich
= 1969 =

02. श्री.एन. सरकार
B.N. Sircar
= 1970 =

03. प्रिथ्वीराज कपूर
Prithviraj Kapoor
= 1971 =

04. पंकज मुल्लिक
Pankaj Mullick
= 1972 =

05. सुलोचना (रूबी मेयर्स)
Sulochana (Ruby Myers)
= 1973 =

06. श्री.एन. रेड्डी
B.N. Reddy
= 1974 =

07. धीरेन गंगुली
Dhiren Ganguly
= 1975 =

08. कानन देवी
Kanan Devi
= 1976 =

09. निन्तिन बोस
Nitin Bose
= 1977 =

10. आर.सी. बोराल
R.C. Boral
= 1978 =

NATIONAL FILM AWARDS’18 | 013
पूर्ववर्ती दादासाहेब फाल्के पुरस्कार विजेता
DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS

11. Sohrab Modi
   * 1979 *

12. P. Jairaj
   * 1980 *

13. Naushad Ali
   * 1981 *

14. L.V. Prasad
   * 1982 *

15. Durga Khote
   * 1983 *

16. Satyajit Ray
   * 1984 *

17. V. Shantaram
   * 1985 *

18. B. Nagi Reddy
   * 1986 *

19. Raj Kapoor
   * 1987 *

20. Ashok Kumar
   * 1988 *
पूर्ववर्ती दादासाहेब फालके पुरस्कार विजेता
DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS

लता मंगेशकर
Lata Mangeshkar
= 1989 =

ए. नageswar Rao
A. Nageswara Rao
= 1990 =

बी.जी. पेंडारकर
B.G. Pendharkar
= 1991 =

डॉ. भूपेन हजारिका
Dr. Bhupen Hazarika
= 1992 =

मुज़फ्फर सुल्तानपुरी
Mujeeb Sultanpur
= 1993 =

दिलीप कुमार
Dilip Kumar
= 1994 =

डॉ. राजकुमार
Dr. Rajkumar
= 1995 =

शिवाजी गणेशन
Shivaji Ganesan
= 1996 =

कवि प्रदीप
Kavi Pradeep
= 1997 =

बी.आर. चोपड़ा
B.R. Chopra
= 1998 =
Dadasaheb Phalke Award Past Recipients

1. Hrishikesh Mukherjee - 1999
2. Asha Bhosle - 2000
3. Yash Chopra - 2001
4. Dev Anand - 2002
5. Mira Nair - 2003
6. Adoor Gopalakrishnan - 2004
7. Shyam Benegal - 2005
8. Tapan Sinha - 2006
10. V.K. Murthy - 2008
पूर्ववर्ती दादासाहेब फालके पुरस्कार विजेता
DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS

1. डी. रामानायक
   D. Ramanaidu
   = 2009 =

2. के. बालाचंद्र
   K. Balachander
   = 2010 =

3. सौमित्र चटर्जी
   Soumitra Chatterjee
   = 2011 =

4. प्राण
   Pran
   = 2012 =

5. गुलजार
   Gulzar
   = 2013 =

6. शशि कपूर
   Shashi Kapoor
   = 2014 =

7. मनोज कुमार
   Manoj Kumar
   = 2015 =

8. के. विश्वनाथ
   K Viswanath
   = 2016 =

9. विनोद खन्ना
   Vinod Khanna
   = 2017 =
दादासाहेब फळक पुरस्कार समिति

DADASAHEB PHALKE AWARD COMMITTEE

Asha Bhosle is one of the legends of Indian music, particularly Hindi film music. Singing as a playback singer in 1943, she has sung for over a thousand films. Bhosle's work includes film music, pop, ghazals, traditional Indian classical music and folk songs. World Records Academy recognised her as the 'Most Recorded Artist' in the world in its Book of World Records as the most recorded artist in the world in 2009. In 2011, she was acknowledged by the Guinness World Records as the most recorded artist in music history. She is a recipient of the Dadasaheb Phalke Award in 2000 and the Padma Vibhushan in 2008.
Ramesh Sippy


T.S. Nagabharana

T.S. Nagabharana is an Indian film director active in the Kannada film industry and a pioneer of the parallel cinema. He is one of the few film directors to have straddled the mainstream and parallel cinema worlds. He achieved success both in television and cinema. He has multiple National Awards to his credit.
Anil Kapoor


Karan Johar

अमिताभ बच्चन
दादाशेह फालके पुरस्कार विजेता, 2018

ये एक सुखद संयोग है कि अमिताभ बच्चन ने इसी साल फिल्म उद्घोष में अपने 50 साल पूरे किए हैं और इसी साल उन्हें भारतीय सिनेमा के सर्वोच्च समान दादासेह फालके से नवाजा गया है। 1999 में उन्हें बीबीसी ने सादी के सितारे के तौर पर लूटा हासिल हुआ, जिसने दिनदहाड़े फिल्म को अपने पांच दरार दिखाया।

इन्होंने अपने अभिनय की शुरुआत 'सात हिंदुस्तानी' (1969) से की थी, और आगे चलकर उन्होंने 'आंदर' (1971), 'जंजीर' (1973), 'दीवार' (1975), 'शोले' (1975) और 'डॉ. डोन' (1978) जैसे चर्चित फिल्मों में शुभारंभ किया है, जिसके बाद उनकी एंट्री एंग्री मैन की छवि बनी और वो देश के दिलों की धड़ड़ कन्या बन गए। इनके इन फिल्मों में निभाए फिल्म और उनका असार भारत के युवाओं पर प्रभाव छोटा है। युवाओं ने उन्हें आपना बात करने वाले हीरो की तरह देखा।

1970 का अंत होने होते ही बच्चन 35 फिल्मों में काम कर चुके थे। तब से अब तक कुछ वक्त को आगर छोड़ दिया जाए तो यह हमेशा ही बड़े पर्दे के शाहसेह रहे हैं। अपनी बेहतरीन अभिनय, दमदार संवाद आदर्शगी उनके अभिनय में धर धार लगा देता है, हिंदी सिनेमा में इनके कुछ नहीं हैं जो मूलने वाले किरदारों में, इंस्पेक्टर विजय (जंजीर), जय (शोले), डॉ. डोन, डॉ. भास्कर बर्नार्ड बाबु मोशाय (आंदर), एंग्री मैन गोविल्स वेट्स (समर अकबर एंडोनी) अर्जुन सिंह (तमक हलाल), कालिया (कालिया), विजय नीनानाथ वौहान (अभिनय), इंस्पेक्टर विजय खुश योगवाला ज़ंगशाह (शांतिशाह), विकी कपूर (सराय), राज मल्होत्रा (बाबबाबा), रुपान नागरेव (शरकर), अर्चित (सह), माफ्कोर बेनजी (फिछ) और कई और किरदार शामिल हैं। इनकी फिल्म की ऊँची विदेशी और सामाजिक बंधनों को छोड़ देती है और इनका निभाया किरदार आम इंसान से सीधा नाता जोड़ लेता है बाहेर फिर वो देश का हो या विदेशी। यहीं ही इन्हें भारत का सबसे अविभाजित शाहसेह बनाने में भरोसे करता है।

एक सफल अभिनेता के साथ ही बच्चन विख्यात हिंदी कवि हरिशंसा राय बच्चन और तोल्स बच्चन के पुत्र हैं। इन्होंने गायकी और फिल्म निर्माण में भी हाथ आज्ञापत्ता है।

इनकी कंधी बर्नार्ड, ग्राही आँचल और वजहदार आवाज इन्हें एक ऐसे व्यक्ति के तौर पर प्रस्तुत करती है जो पर्दे पर एंट्री एंग्री मैन की छवि के साथ जड़े हुए से नायक कर सकती है। अपने वक्त के चरित्र बिरोधित किरदारों से इतने बच्चन ने अक्षर समाजिक बुद्धियों जैसे ब्रट्टायर, सामाजिक शोषण, मज़दूरी से लड़ने वाले किरदारों को निभाया। फिल्म जैसे शोले, गर्द, जंजीर, बुली, दीवार, संस्कार, काला पथर, कालिया आदि में निभाया इनके किरदारों से सीधा नाता जोड़ते हैं।
दादासाहेब फाल्के पुरस्कार विजेता परिचय
DADASAHEB PHALKE AWARD WINNER PROFILE

बच्चन अपनी पत्नी जया भादुकी जो एक अभिनेत्री है, उनसे फिल्म गुड़ी भोजपुरी में काम करने के दौरान मिले थे, दोनों ने 1973 में शादी कर ली। इसके साथ में उन्होंने बहुत से फिल्में जैसे, जंजीर, अभिमान, सिलसिला, कंगी खुशी कंगी गग आदि की।

कई दूसरे समानांतर बच्चन को 'अभिनय' (1990), 'ब्लैक' (2005), 'पै' (2009), और 'पीकू' (2015) के लिए चार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। बच्चन ने 175 से भी ज्यादा हॉलीवुड फिल्मों में काम किया है और 70 साल की उम्र में 'बज ललैंग' की 'दि ग्रेट गेट्सबी' से उन्होंने हॉलीवुड में पदार्पण किया। वह विचले एक दशक से भी ज्यादा कला से टेलीविजन गेम शो 'कौन बनेगा करोड़पति' का संचालन भी कर रहे हैं।
Amitabh Bachchan
Dadasaheb Phalke Award Winner, 2018

It’s a pleasant coincidence that Amitabh Bachchan has won the 50th Dada Saheb Phalke Award, Indian cinema’s biggest honour, in his 50th year in the Indian film industry. Bachchan, who was recognised as the ‘Star of the Millennium’ by the BBC in 1999, has been acting in Hindi films for over five decades now.

He made his acting debut with ‘Saath Hindustani’ (1969), followed by ‘Anand’ (1971). His next films, like ‘Zanjeer’ (1973), ‘Deewar’ (1975), ‘Sholay’ (1975), and ‘Don’ (1978), gave him an image of ‘angry young man’ and made him a heartthrob of the nation. His characters in such films and his effective portrayals of them embodied the aspirations and emotions of the youth of India, who saw in him a champion of their cause. By the end of the 1970s, Bachchan had appeared in over 35 films! Since then he has reigned supreme on the big screen, except for a few hiatuses. Amitabh Bachchan, with his supreme skill in acting and unmatched dialogue delivery, increased the scope of his roles, bringing to life some of the most unforgettable characters in Hindi cinema. Some of these include Inspector Vijay (‘Zanjeer’), Jai (‘Sholay’), Don (‘Don’), Dr Bhaskar Banerjee aka Babu Moshay (‘Anand’), Anthony Gonzalves (‘Amar Akbar Anthony’), Arjun Singh (‘Namak Halal’), Kalia (‘Kalia’), Vijay Dhananjay Chauhan (‘Agneepath’), Inspector Vijay Kumar Srivasatav/Shehanshah (‘Shehanshah’), Vicky Kapoor (‘Sharaabi’), Raj Malhotra (‘Baghban’), Subhash Nagre/Sarkar (‘Sarkar’), Auro (‘Paa’), Bhaskar Banerjee (‘Piku’), and many more. His convincing portrayal of emotions in his acting transcended all social and linguistic boundaries and established a personal connect with the viewers in the country and abroad, making him one of the greatest and most versatile actors in India.

Besides being a hugely successful actor, Bachchan, a son of renowned Hindi poet Harivansh Rai Bachchan and Teji Bachchan, has also dabbled in playback singing, narration, and film production.

Interestingly, his tall persona, intense eyes and deep baritone voice, which came in the way of his becoming an actor initially, became his biggest asset and added gravity and nuances of his angry man image on screen. Unlike the popular, romantic characters of his time, Bachchan often portrayed characters of grit fighting ills of the society, like corruption, social oppression, slavery, etc. His characters in films like ‘Sholay’, ‘Mard’, ‘Zanjeer’, ‘Coolie’, ‘Deewar’, ‘Shehanshah’, ‘Kala Pathar’, ‘Kalia’, etc. had a huge connect with the large masses.

Bachchan met his future wife Jaya Bhaduri, also an accomplished actor, while working together in the film ‘Guddi’. They married each other in 1973. They worked together in many films like ‘Zanjeer’, ‘Abhimaan’, ‘Silsila’, ‘Kabhi Khushi Kabhi Gham’, etc.

Bachchan has won four National Film Awards, for ‘Agneepath’ (1990), ‘Black’ (2005), ‘Paa’ (2009), and ‘Piku’ (2015), besides several other awards. Bachchan has appeared in over 175 Bollywood films, and made his Hollywood debut in Baz Luhrmann’s ‘The Great Gatsby’ (2013) at the age of 70. He also has been hosting popular television game show ‘Kaun Banega Crorepati’ for over a decade now.
The National Film Awards are given in three sections, viz., Feature Films, Non-Feature Films and Best Writing on Cinema. Each section has a different jury. Since the 57th National Film Awards, the awards in feature film section are decided through a two-tier selection process comprising five regional panels and a central jury. The juries are distinguished persons in the field of cinema, other allied arts and humanities. The jury deliberations are confidential, which provides an enabling environment to insulate the jurors from external influences, and also facilitates selection with impartiality, freedom and fairness.
Rahul Rawail is a well-known film director whose work spans over three decades and includes 17 feature films and two TV series. His notable films include ‘Love Story’ (1981), ‘Betaab’ (1983), ‘Anjaam’ (1994), ‘…Aur Pyaar Ho Gaya’ (1997) and ‘Jo Bole So Nihal’ (2005). He is credited with launching popular film stars such as Kumar Gaurav, Amrita Singh, Sunny Deol, Kajol and Aishwarya Rai Bachchan. He has been on the jury of IFFI’s Indian Panorama, National Film Awards and the jury which selected Indian films for the Oscars. He was the acting chairperson of the IFFI in 2017.
फिल्म कंग्रेस ज्ञानी (FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

अर्चना आर सिंह (Archana R. Singh)
अर्चना आर सिंह, पीएचडी है और स्कूल ऑफ़ कम्युनिकेशन स्टडीज, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़ की प्रोफेसर और चीफ प्रोग्राम्स पॉलिसी है। वह एफटीआईआई सोसाइटी और एफटीआईआई की अकादमिक और संचालन समिति की सदस्य रही है। वह पुरातत्व निर्माण, लेखक, वीडियो और कलाकार भी है। वह भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय भक्ति और संस्कृति में प्रवर्तक रही और अन्य अनुसंधान संस्थाओं के लिए अनुसंधान लेकर देती है। इन्हें 2015 में कॉन्फ्रेंडेशन ऑफ़ इंडियन इंडस्ट्रीज़ (सीआईआई) की तरफ से बुम्मा ऑफ़ एक्शन से नवाजा गया था।

Archana R. Singh, PhD, is a Professor and Chairperson of the School of Communication Studies, Panjab University, Chandigarh. She is a member of Film and Television Institute of India (FTII) Society and a Member of FTII’s Academic and Governing Council. She is also a documentary maker, scriptwriter and voice-over artist. She conducts Vani workshops for Akashvani, and online lectures for National Institute for Technical Teachers Training. She was awarded the ‘Woman of Action’ award by Confederation of Indian Industries (CII) in 2015.

अशोक राने (Ashok Rane)
अशोक राने फिल्म सोसाइटी के साक्ष्य कार्यकर्ता, फिल्म आलोचक, इतिहासविद, फिल्म शिक्षक, लेखक, निर्देशक और फिल्ममंडल इंटरव्यू शीर्षक (फीडबैक) और औरंगाबाद इंटरव्यू फिल्म फेस्टिवल के फेस्टिवल निदेशक हैं। वह इंडियन फिल्म अकादमी (एआईएफ) के संस्थापक निदेशक हैं। इन्हें दो बार राष्ट्रीय समारोह से नवाजा जा चुका है – पहला विश्व सिनेमा के इतिहास पर लिखी गई गुड़ियां के लिए और दूसरी बार आत्मविश्वास फिल्म आलोचक के लिए। वह कार्नाटक में मराठी सिनेमा के लिए बॉक्स ऑफिस में अपनी सेवाएं दी रही है जो 2016 से तक की चाँद महाराष्ट्र सरकार को पहलत है।

Ashok Rane is a film society activist, film critic, historian, film teacher, writer, director and also the festival director of Fimingo International Short Film Festival and Aurangabad International Film Festival. He is the Founder Director of Indian Film Academy (IFA). He is a recipient of two National Awards – the first one for his very first book on the history of world cinema and the other one as the Best Film Critic. He has been serving as the coordinator for the Marathi Cinema at Cannes Film Market, an initiative of the government of Maharashtra since 2016.
B.S. Lingadevaru is a well-known actor, producer and director of the small screen. He is also a pharmacist, hailing from an agricultural-trading family in Karnataka. ‘Mouni’ was his first film, followed by ‘Kaada Beladingalu’ and ‘Naanu Avaranna Avalu’. All the three films were selected for the Indian Panorama and won State and National Awards. He is instrumental in taking award-winning films to viewers across Karnataka through ‘Nammaora Chintotsava’.

Imo Singh is a film director, producer and scriptwriter with about 25 years’ experience. Hailing from a family with a lineage in Manipuri dances, he had a natural affinity for the arts. Dreaming of working for the big screen, he joined Film and Television Institute of India (FTII) in Pune. He subsequently earned a rich experience in direction, production, scripting and teaching. His short film ‘Punaravitti’ won a National Film Award in 1992. He is a governing council member at FTII, teaches filmmaking and has been a jury at the National Film Awards 2017.
के वासु (K. Vasu)

के वासु एक फिल्म निर्देशक, लेखक और निर्माता हैं जिन्हें क्रेटीय सिनेमा का 42 साल का अनुभव है। इनके हिस्से ली थीम फिल्मों में 40 फिल्मों और चार तेनुपूरी पुरस्कार है। वह 63वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह के निर्माणिक मंडल के सदस्य रह चुके हैं। इन्होंने विभिन्न कलेक्टर के फिल्मों का निर्माण किया है जैसे कॉमेडी, एक्शन, भक्ति फिल्मों में जिनसे आपके सफलता हासिल की। 18 सुपरहिट फिल्मों के साथ इन्हें तेनुपूरी इंडस्ट्री में कुछ काम सबसे बड़ा करना का श्रेय भी जाता है। ये अभियात्मक विशेषज्ञों को सबसे पहले स्क्रीन पर लाना और उन्हें पहली 100 दिन पूरे करने दाली फिल्म देना। साथ ही, इसमें बालश्रमण को बचाव अभिनेता लेकर आया। इसके अलावा इन्होंने पहली तेनुपूरी फिल्म बनाई जिसे अमेरिका में बनाया गया था।

K. Vasu is a film director, writer and producer with 42 years of experience in regional cinema. He has over 40 films in three languages and four Telugu serials to his credit. He was a jury member for the 63rd National Film Awards. He directed a wide variety of movies, such as comedy, action, and devotional films, and achieved success in all. With 18 superhit films, he also has to his credit many firsts in the Telugu Industry — like introducing megastar Chiranjeevi and giving him his first 100 days film; introducing S.P. Balasubramaniam as a character artist, and directing the first Telugu film that was shot in the US.

मेजर रवि (Major Ravi)

मेजर रवि (एक रवित्रो) एक भारतीय फिल्मकार और नलियल सिनेमा के कलाकार हैं। इन्होंने भारतीय सेना में बंधा मेजर अपनी सेवाएं दी हैं। इन्होंने कीर्ति चक्र (2006) का निर्देशक एवं लेखन किया जिसने राजस्थान पटकथा के लिए केंद्र राज्य फिल्म समारोह हासिल किया। इनकी अन्य फिल्म मिशन 90 डेज (2007), पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की यात्रा को पकड़ने से जुड़े आंदोलन में उनके खुद के अनुयाय पर आधारित हैं। फिर इन्होंने कुरक्षेत्र (2008), वंदे (2010), कर्म योग्य (2012), पिकेट 43 (2015) और 1971 — बियोपोर्ट्रेट्स (2017) का निर्देशन किया।

Major Ravi (aka AK Raveendran) is an Indian filmmaker and actor in Malayalam cinema. He also served as a Major in the Indian Army. He wrote and directed ‘Keerthi Chakra’ (2006) which won him a Kerala State Film Award for Best Screenplay. His next ‘Mission 90 Days’ (2007) was based on his experiences from an operation to catch the killers of former Prime Minister Rajiv Gandhi. He then directed: ‘Kurukshetra’ (2008), ‘Kandahar’ (2010), ‘Karma Yoga’ (2012), ‘Picket 43’ (2015) and ‘1971: Beyond Borders’ (2017).
राज दत्त (Raj Dutt)
राज दत्त मराठी फिल्म के स्वर्णिम काल के अहम फिल्मकारों में से एक और राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड विजेता हैं। उन्होंने 1960 से 1980 के दौरान कई सफल फिल्मों का निर्देशन किया जिसमें परवेज शामी (1968), अमरल (1969), देवकीनंदन गोपाल (1977), पुरुषोत्तम (1985) शामिल हैं। ये सभी फिल्में महाराष्ट्र स्टेट अवार्ड में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार हासिल कर चुकी है। इसके अलावा गोलीमाबाबू (1972) और अश्लेष (1978) ने उनकी निर्देशित फिल्में हैं। इन्होंने कुछ फिल्मों में अभिनय भी किया जिसमें छोटे नवाब (1981-संगीतम), दुसर्या जनगती (2012 मराठी) और वास्तव (2017) शामिल हैं।


डॉ. स्याबास्ची मोहापट्रा (Dr. Sabyasachi Mohapatra)
डॉ. स्याबास्ची मोहापट्रा उड़ीसा के जाने वाले फिल्मकारों में से एक है। वह फिल्मगीत और गान सुंदरों के साफ चित्रण के लिए जाना जाता है। उनके हाल के काम से साला बुधा रा लुहा (2015 — राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता) ने एरियालएफएसआई 2016 में सर्वश्रेष्ठ फिल्म और साली जागरण फिल्म फेरिटल में स्पेशल ज्युरी अवार्ड हासिल किया था। उनकी फिल्म साला बुधा (2013) और अदिम विचार (2014— राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता) इंडियन पैनोरामा के लिए चुनी गई। ये राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड, भारतीय ऑस्कर चयन समिति और इंडियन पैनोरामा के निर्माणकात्मक मंडल के सदस्य रहे हुए हैं।

Dr. Sabyasachi Mohapatra is one of the acclaimed filmmakers from Odisha. He is known for his impeccable portrayal of human values. His current work ‘Sala Budha Ra Badla’ is under production. His previous film ‘Pahada Ra Luka’ (2015—National Award Winner) won the Best Feature Film Award at LIFFI 2016 and a Special Jury Award at 7th Jagarani Film Festival 2016. His films, ‘Sala Budha’ (2013) and ‘Aadim Vichaar’ (2014-National Award Winner) were selected for Indian Panorama. He has been a Jury Member for National Film Award, Oscar Selection Committee of India and Indian Panorama.
Vijayakrishnan (Vijayakrishnan)


Vinod Ganatra (Vinod Ganatra)

Vinod Ganatra received the Liv Ullmann Peace Prize at the Chicago International Children’s Film festival in 2009 for his film ‘Harun-Arun’. He has been active in film and television from 1982 and has edited and directed about 400 documentaries and newsreels. He has produced 25 TV programmes in Hindi, Marathi and Gujarati for Children & Youth. He has also made three films for Children’s Film Society India (CFSI), which have won a number of national and international awards. Widely travelled, he has also served as Jury at 75 International Film Festivals world over.
A.S. Kanal

A.S. Kanal is a graduate from FTII, Pune and has worked as a cinematographer for many ads, films, documentaries and TV programmes. Some of his films as a cinematographer include ‘Harun-Arun’ (2009), ‘The Hangman’ (2005) and a documentary titled ‘V Babasaheb Life in Full Open’ (2013). He has also worked as a teacher of cinematography at FTII, Pune. Currently, he is working as an independent producer and trainer.
गैर—फीचर फिल्म ज्यूरी

(NON-FEATURE FILMS JURY)

अतुल गंगवार (Atul Gangwar)

अतुल गंगवार फिल्म लेखक संघ और भारतीय फिल्म और टेलीविजन निर्देशक संघ (सिल्वर) के सदस्य हैं। वे टेलीविजन छवियों में निभाने वाले दो दर्शकों से बात करने वाले प्रोग्राम पर अपनी संदेह दे रहे हैं। वह कई विषयों पर वृत्तिविद्या का निर्माण और संपादन कर चुके हैं।

इन्होंने इन्फोटेन्मेंट कार्यक्रम जैसे अदाबी कॉकटेल और उर्दू बाजार का निर्माण भी किया। इन्होंने बताया एक प्रश्न-प्रत्यावर्तन, व्यवस्था पर आधारित अन्य कार्यक्रम भी बनाया है। अतुल जलदेव फिल्म के लिए कहानी लेखन और निर्देशन भी कर रहे हैं, जहां इनकी कहानियों को फिल्म मुफ़्तक़ज़ा के लिए रूपांतरित किया गया। यह राष्ट्रीय अभार विजेता निर्देशक उदयल चटर्जी के लिए हू किल्डे दोनोंदिग्द्व मनोरंजन के पत्रकार लेखन पर भी काम कर रहे हैं।

Atul Gangwar is a member of Film Writers Association (Mumbai) and Indian Film and Television Directors Association (Mumbai). He has been working with television industry as a programmer for over two decades. He has produced, edited documentaries on various subjects. He has produced infotainment programs like ‘Adabi Cocktail’ and ‘Urdu Bazar’. He has also worked as an anchor/presenter in many election based satirical programs. Atul is also directing and writing the story for the film ‘Jalebi Culture’, while his other story has been adopted for the film ‘Muawaza’. He is also working on the screenplay of ‘Who Killed Deendayal Upadhay’ for National Award winning Director Mr. Ujjwal Chatterjee.

चेतन माधुर (Chetan Mathur)

चेतन माधुर एक फिल्मकार, लेखक, निर्देशक, पटकथाकार और विश्वविद्यालय हैं। इन्होंने 500 से भी ज्यादा चूल्हाबाद, यात्रा पूर्तात, विज्ञापन फिल्म, प्रोमो और लघु फिल्मों का लेखन किया है। इनको लघु फिल्म ‘छात्राओं का आलम’ और ‘इंडियन दीवानी के गोलन्दाजा’ जूनियर सीलियार्स के शुक्रवार और अंत में दिखाया गया था। यह कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय फिल्म अवार्ड्स और पुरस्कार के निर्माण में भी रह चुके हैं। इन्होंने कई संगीत निर्माता कंपनियों के लिए 75 से अधिक रूपक में विभिन्न प्रोजेक्ट निर्देशित किये हैं।

Chetan Mathur is a filmmaker, writer, director, journalist & educationist. He has written and directed over 500 documentaries, travelogues, advertisement films, promos & short films. He has directed over 2500 music videos of prominent singers, numerous TV serials and programs for various channels. His short film ‘Dastaan-E-Alam Ara’ was the opening and closing film of Golden Jubilee celebration of Indian Talkie. He has also been in the jury of various National & International Film Awards and Festivals. He has directed over 75 devotional music albums and promos for various music companies. As a gesture of giving back to the society, he has devised syllabus for various media schools as well as universities.
Dhvani Desai is an international and Indian-award winning animation filmmaker, curator and poet. She has been in the animation field for over 27 years and has established her animation studio ‘Metamorphosis’. She has been a jury for many international and Indian film festivals including Grand Jury in New York film festivals. She has also been a curator of animation film packages from various countries for the Mumbai International Film Festival (MIFF). She is on the Advisory board of Children’s Film Society India (CFSI), and her work has been mentioned in World encyclopaedias and research journals of Animation.

Rajendra K. Mahapatra is a film editor and director. With a career spanning 21 years, he has edited more than 500 corporate, short and feature films, documentaries, and 2000 episode of TV Serials. He won the Odisha State Award for Best Editing for ‘Jai Jagannath’, which was released in 15 languages. He has been a jury for the International Children Film Festival, Bangalore in 2015 and also for the International Children Film Festival, Ahmedabad in 2019. Earlier, he started as a child theatre actor and acted first time in a feature film in 1978.
Srivatsa B. R. wears many illusrious hats at once. An ace photographer, with a keen interest in cinema, he has profiled most corporate leaders of India and the world. He has produced documentaries for Center for Environment Education (CCE), Ministry of Environment, GOI, and Department of Health, Govt of Karnataka. He has received many laurels such as the Aryabhatta International Award, Kempegowda Prashati and Accredited Media Photographer award from the Karnataka state government. Also acclaimed as a portrait photographer in the arts scene and film industry, many leading celluloid stars have been captured by his lens.

Vandana Kohli is a filmmaker, musician and writer with an interest in the human mind and behavior. She has produced and directed the international award-winning documentary ‘The Subtext Of Anger’. Her production of the Indian National Anthem has over six million views on Social Media. She has served on the Jury for non-feature films for the National Awards, 2015. Vandana has written weekly columns for ‘The Week’ on mind-brain-psyche, during 2012-2018. She has released two instrumental albums of Indian Melodies on the Piano.
Utpal Borpujari is a National Film Award-winning film critic and filmmaker. Borpujari won the National Award for his debut feature film 'Ishu' (2017). He has also won the Swarna Kamal for Best Film Critic in 2002. His films have been invited to a number of international film festivals. He holds an M.Tech degree in Applied Geology from the Indian Institute of Technology (IIT), Roorkee.

Yatindra Mishra is a poet, editor, music and cinema scholar. He hails from the lineage of the Ayodhya royal family. His book ‘Lata: Sur-Gatha’ (2016), received numerous awards including the National Film Award for Best Writing on Cinema. He has also written a book about Hindi cinema’s musical journey titled ‘Humsafaar’ in 2013. He has four collections of Hindi poetry to his credit. He has also written ‘Girija’ (2001), ‘Devpriya’ (2007) and ‘Sur Ki Baradari’ (2009) about the life and work of thumri singer Girija Devi, danseuse Sonal Mansingh and shahnaai maestro Bismillah Khan respectively.
**Vinod Ganatra (Chairperson)**

Vinod Ganatra received the LVI Ullmann Peace Prize at the Chicago International Children’s Film festival in 2009 for his film ‘Harun-Arun’. He has been active in film and television since 1982 and has edited and directed about 400 documentaries and newsreels. He has produced 25 TV programmes in Hindi, Marathi and Gujarati for Children & Youth. He has also made three films for Children’s Film Society India (CFSI), which have won a number of national and international awards.

**Akshaditya Lama (Member)**

Akshaditya Lama is a director, screenplay and dialogue writer. He began his career in 1997 by assisting in ad films and feature films like ‘Ghadan-Ek Prem Katha’. He made his directorial debut with ‘Cigarette Ki Tarah’ (2012). His film ‘Nani Teri Morni’ was the first official Nagamese language film and was shot entirely in the hills of Nagaland. He has been a theatre artist and playwright and has worked in various TV shows also.

**Monalisa Mukherjee (Member)**

Monalisa Mukherjee is a poet, a production designer, and former casting director. She started her career as a direction intern at Equinox Films and went on to become Equinox’s first female producer. In 2007, Mona with her husband Badhayan formed Little Lamb Films. She has produced two feature films called ‘Teenkahoor’ (Bangla) and ‘The Violin Player’ (Hindi), both of which have travelled globally to various film festivals. She has recently directed her first short film called ‘Kiski Leye’.

**Namrata (Member)**


**Saurav Dugarah (Member)**

Saurav Dugarah is a cinematographer based in Guwahati, Assam. After his graduation from Gauhati University, he did a course in cinematography from Regional Govt. Film and Television Institute, Guwahati. After this, he has been working as a professional cameraman in both film as well as television. In 2014, he has directed his first feature length film ‘Orang’, which got the Silver Lotus Award at the 62nd National Film Awards, 2015.
फीचर फिल्म जूरी | उत्तर पैनल

मेजर रवि (अध्यक्ष) | Major Ravi (Chairperson)

मेजर रवि गणपति सेना के एक फिल्मकार और डिजिलकार हैं। उन्होंने उत्तर पैनल में मेजर रवि अपनी सेवाएं दीं हैं। इन्होंने कोल्हापुर (2006) का निर्देशन एवं लेखन किया, जिसने अस्त्रधारा हकीकत के दौरे करते सभ्यता फिल्म स्तर में उत्कृष्टता किया। उन्होंने अन्य फिल्मों में 30 भेंड (2007), बुध विख्याती रात के गंगा के समान हिस्से दिखाया। उन्होंने इन फिल्मों के लिए विभिन्न पुरस्कार जीते।

Major Ravi is a filmmaker and actor in Malayalam cinema. He also served as a Major in the Indian Army. He wrote and directed ‘Keerthi Chakra’ (2006) which won him a Kerala State Film Award for Best Screenplay. His next ‘Mission 90 Days’ (2007) was based on an operation to catch the killers of former Prime Minister Rajiv Gandhi. He then directed: ‘Kurukshetra’ (2008), ‘Kandanhar’ (2010), ‘Karma Todho’ (2012), ‘Picket 43’ (2015) and ‘1971: Beyond Borders’ (2017).

अशोक शरण (सदस्य) | Ashok Sharan (Member)

अशोक शरण, कंप्यूटर फिल्म प्राचीन की दृष्टि से सलामी में दिखाया जा रहा है। 1978 में बॉलीवुड इनकारक कर दूर करने के बाद अशोक ने 1981 में द किड्डी नाम की अपनी पहली छुपी हुई फिल्म का निर्माण किया, जिसमें एक स्थानीय भी शामिल था। इन्होंने इन्होंने वर्जिन फिल्मों के लिए 150 से अधिक सुरक्षा का निर्माण एवं निर्देशन किया, जिसमें कई फिल्म जैसे ‘द गुंडा’, ‘द पारम्परिक’ की तारीख। 2008, 2016 और 2018 में अशोक, राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार के निर्माताओं में शामिल रहे।

Ashok Sharan is an advisory panel member of the Central Board of Film Certification (CBFC). Starting out as a drama artist in 1978, he produced and acted in his first short film 'The Degree' in 1981. He has produced and directed over 150 documentaries on Indian tribal communities. He has also made a feature film on Bisa Munda. He served as a juror of the National Film Awards in 2006, 2016 and 2019.

देवेंद्र केंद्रवाल | Devendra Khandelwal (Member)

देवेंद्र केंद्रवाल देवेंद्र केंद्रवाल के नाम से जाने जाने दिखाया गया है, जिन्होंने अपनी 400 लघु फिल्म और इसके ही संदर्भ में विकास किया। इन्होंने पहले फिल्म का निर्माण किया, जो अब भी निर्माण करते हैं। इन्होंने कई सुरक्षा का निर्माण किया, जिसमें मुख्य रूप से तैरे कक्ष का काम किया। उन्होंने फिल्म निर्माता के रूप में अभिषेक कर दूर कर दिया। उन्होंने फिल्म के लिए संगीत और सांगीतिक समेत कार्य कराया।

Devendra Khandelwal is a producer-director who has made around 400 short films and equal number of old commercials. He has made over 18 films on Mahatma Gandhi. He has acted as a leading man in 18 films in five languages. A record holder in the ‘Limca Book of Records’, his body of work ranges from popular comedy serials, historical and religious films, educational and information documentaries, sports based series, cultural and informative documentaries and children’s programs.

कुलदीप सिन्हा (सदस्य) | Kuldeep Sinha (Member)

कुलदीप सिन्हा कंप्यूटर फिल्म समान संवादित करने वाले फिल्मकार हैं जो 100 से अधिक छोटे-छोटे सी फिल्मों को निर्माण कर चुके हैं। इनकी बायंकर मूल फिल्मों में हैं – ‘रूप’ – दी रिमांग, ‘दूसरे छंद’ – संस्कृत टीवी, ‘नॉन कोरेयन एल्बम’ संरचनात्मक, ‘एन के और दूसरे’ और ‘एडिशन’ पहलू। फिल्म निर्माता के रूप में इन्होंने इन लघुफिल्मों का जन्म दिखाया है। फिल्म प्रगति में दूसरे निर्माताओं के साथ काम करने का काम किया।

Kuldeep Sinha is a National Film Award Winning filmmaker who has written and directed more than 100 short films. Some of his remarkable films include ‘Rafi: We remember you’, ‘Toote Pankh: Through a lens starkly’, ‘Non-conventional Energy Resources’, ‘No Room for fear’ and ‘And then the floods’. His trilogy on filmmaking is equally popular with students of cinema. He has served as a Chief Producer/ Director-General in Films Division and as CEO in the Children Films society of India (CSFI).

साहित्य दत्तात्रय सोलपुरकर (सदस्य) | Rahul Dattatray Solapurkar (Member)

राहुल दत्तात्रय सोलपुरकर ने 100 से ज्यादा छोटे सी मूल फिल्मों में काम किया है, जिल्ला से फरीदेश, पतलाहुक-पतलाहु, राजाविकास, बालाचंद, यात्रा वातावरण (2014, वेल्फेस्टर, 2016) हस्ताक्षर किया। इन्होंने इनी फिल्मों में भी बाहर उड़े, डी बालाचंद अभिनेता (2000), हरन (2004), वन (2017) हस्ताक्षर किया। उन्होंने 30 से ज्यादा छोटे सी मूल में अभिनय किया है, जिसमें उसकी सफलता और फिल्मों के साथ काफी प्रभावशाली रहे हैं।

FEATURE FILMS JURY | SOUTH-1 PANEL

ASHOK RANE (Member)

Ashok Rane is a film society activist, film critic, historian, film teacher, writer, director and also the festival director of Filminges International Short Film Festival and Aurangabad International Film Festival. He is a recipient of two National Awards – the first one for his very first book on the history of world cinema and the other one as the Best Film Critic. He has seven books, seven documentaries, two TV serials and two films to his credit.

A. KARTHIKRAOJA (Member)


B. DIWARAK (Member)

B. Diwakar is a qualified cinematographer from Films and Television Institute of India (FTII), Pune. He has a vast experience as the Director of Photography (DoP) and has worked in many as 34 feature films. He has taught filmmaking at AJK Mass Communication Research Centre (MCRC), Jamia Millia Islamia, Delhi for nearly two decades.

JAYARAM KAALAS (Member)

Jayaram Kailas is a National Film Award winning director, noted for his use of strong narratives. He has directed several films that have been well-received and have garnered critical acclaim. Kailas is known for his ability to create films that are engaging, with a blend of drama and comedy, and are able to connect with audiences on a personal level.

SHAIKHO GUPTA (Member)

Shailsh Gupta is a film director, cinematographer and a graduand of FTII, Pune. He has produced and directed more than 100 TV commercials, audio-visuals, corporate films, music videos, public service campaigns and TV shows under his home banner ‘Shadows & Whispers’. Some of his highly acclaimed documentaries include, ‘Khal’ Tales,’ ‘Of Life and Love’; and a German Docu-Drama, ‘Tibet - Journey through a Forbidden Land’. He conducted numerous filmmaking workshops for children.
I. Imo Singh (Chairperson)

Imo Singh is a film director, producer and scriptwriter with about 25 years’ experience. Having a family with a lineage in Manipuri dances, he had a natural affinity for the arts. Dreaming of working for the big screen, he joined Film and Television Institute of India (FTII) in Pune. He subsequently earned a rich experience in direction, production, scripting and teaching. His short film ‘Puranratna’ won a National Film Award in 1992.

II. Balabhadrapatruni Ramani (Member)

Balabhadrapatruni Ramani is a Telugu novelist, story writer and movie story screenplay writer. Ramani’s entry into literature started in 1993 with poetry and a short story ‘Mulubata’, published in ‘Vipula’ magazine. Her first novel ‘Thrupthi’ was published in ‘Chatura’ magazine. She has written three plays for the All India Radio (AIR). She has also written dialogues for TV shows such as ‘Tusasi Dalam’, ‘Aanthamukham’ and ‘Kalakanidi’. Winner of several accolades, she has written close to 150 short stories.

III. Malli Sahai (Member)

Malli Sahai is the former director of Directorate of Film Festivals (DFF) where she served for 20 years. She has written three books on Indian Cinema. She has been covering international film festivals like Cannes, Montreal, Toronto, etc. for 20 years initially for ‘U.N.L’ and lately for ‘The Sentinel’. She has served as jury for more than a dozen international film festivals abroad and was chairperson of the prestigious Pusan Film Festival in South Korea.

IV. MK. Bhaskara Rao (Member)

MK. Bhaskara Rao is a senior journalist and well-known film critic in Kannada language. He has worked with popular vernacular dailies like ‘Pragavani’ and ‘Samyuktara Karnataka’ for decades. He is also a published short story writer. He has served as a member of the Kannada Film Award Committee and Quality Tag Committees, headed by the legendary B. V. Karanth and M. S. Sathe, respectively. He has won several prestigious awards, including the Karnataka Media Academy award.

V. S.Patel (Member)

S.Patel is a director, scriptwriter, lyricist in Kannada film and TV industry. He wrote and directed the film ‘Nanna Kanasina Hoove’ (2006) and TV serial ‘Saada’. He wrote the script for another film ‘Mellyo’ (2015) and over 15 popular TV series. He has been a member of the Advisory Committee of the CBFC twice – first, between 2007-09 and then, 2012-16. He has also served as a screening committee member for the Bangalore international film festival 2012 and 2013.
फीचर फिल्म ज्युरी | पश्चिम पैनल

भी.एस. लिंगडेवारू (आध्यक्ष) B.S. Lingodevaru (Chairperson)
भी.एस. लिंगडेवारू टेलीविजन से एक जाने वाले अभिनेता, निर्माता और प्रोड्यूसर हैं। कार्यक्रम के एक कृति वाद्यका से जुड़े परिवार से पालतू यह स्वीकार किया गया है कि इन्हें इनके क्रेडिट को जारी रखने में जस्ता अधिक भावना का कारण है।

B.S. Lingodevaru is a well-known actor, producer and director of the small screen. He is also a pharmacist, hailing from an agricultural trading family in Karnataka. ‘Mouni’ was his first film, followed by ‘Kaada Beladingalu’ and ‘Naanu Avanalla Avalu’. All three films were selected for the Indian Panorama and won State and National Awards. He is instrumental in reaching award-winning films to viewers across Karnataka through ‘Nammoora Chitratsuva’.

ग्यान सहाय (सदस्य) Gyan Sahay (Member)
ग्यान सहाय भारतीय फिल्म और टेलीविजन स्थानक (एक्टर/आईयू) 60 से अधिक है, जहां इन्होंने दर्शकों के लिए विदेशों में सफ़र किया है।

Gyan Sahay is a graduate from Film and Television Institute of India (FTII), Pune where he specialized in Cinematography. He started his professional career as a cinematographer in Mumbai with Govind Nihalani, and worked in movies like ‘Bhumika’, ‘Kondura’, ‘Junoon’, ‘Kalayug’, ‘Aakrosh’, ‘Vijeyta’ and Richard Attenborough’s ‘Gandhi’. He is a pioneer in reality shows and multi-camera TV productions in India. He has shot more than 3000 episodes as DOP and almost 1000 episodes as Director on various TV channels.

महेन्द्रा तरेडेसाई (सदस्य) Mahendra Taredesai (Member)
महेन्द्रा तरेडेसाई चेनलसेटू और विडियो इंडस्ट्रीज़ में जो अपनी फिल्म और टेलीविजन टिकिट से जोते जानते हैं, उन्होंने 2014 में निर्देशक की भूमिका परिभाषित की।

Mahendra Taredesai is a screenwriter and director known for his film ‘Dombivli Return’ which he directed in 2014. He wrote its screenplay and dialogues also. He has been writing plays, dialogues, screenplays and making TV serials for over two decades now. He has had a long association with director Dr. Jabbar Patel, especially during the making of his biopic of Dr. B. R. Ambedkar titled ‘Dr. Babasaheb Ambedkar’ (2000).

नीरज पाठक (सदस्य) Neeraj Pathak (Member)
पढ़ने के दौरान नीरज पाठक लघु गुरुजी नाटकों के लिए लेखन, निर्देशन और अभिनय करते आ रहे थे, जब ही वह गुरुजी टेलीविजन का एक प्रसिद्ध नाम बन गया, जिसके लिए उन्होंने फिल्म निर्देशाध्यक्ष की भूमिका निभाई।

While studying, Neeraj Pathak was simultaneously writing, directing and acting in Gujarati plays. Soon, he was a popular name in Gujarati Television. He then shifted to Mumbai and went on to write 1000 television episodes, numerous Ad films and short films. He then went on to write and direct various feature films. Some of his writer/director films include ‘Pardes’, ‘Ghath’, ‘Deewangi’, ‘Aapne’, ‘Right Yaad Wrong’, ‘Bhaiyaji Superhit’. He has recently formed his own banner Gold Mountain Pictures.

पराग चिपाकपर (सदस्य) Parag Chhipaker (Member)
पराग चिपाकपर देशी जीवनवाच्य फिल्म के एंटरटेनमेंट एक्टर हैं। इससे पहले वह आईबीएन 9, जी भूल, राह भूल और इंडिया टीवी से मौजूद एंटरटेनमेंट देश के निर्माता और निर्माताओं में से एक क्षेत्र में कार्य कर चुके हैं।

Parag Chhipaker is the Entertainment Editor of Dainik Jagran. Earlier, he has worked at several media house like IBN 7, Zee News, Star News and India TV as Entertainment Head. Chhipaker has worked in the entertainment industry for 19 years. During his tenure so far, Parag has literally interviewed every leading actor and actress of the Hindi film industry and has been honoured with several awards. He has been a member of the Central Board of Film Certification (CBFC).
Ramesh Sippy (Chairperson)  

Uday Singh (Member)  
Uday Singh is the Managing Director of the Motion Picture Association’s India office, responsible for promoting and protecting the commercial and creative interests of the Hollywood studios in India as well as those of the local screen communities. Before taking this role, Uday was CEO of PVR Pictures; Executive Vice President for the Columbia TriStar Motion Picture Group, and also MD of Sony Pictures India. An alumnus of Harvard Business School, Singh completed on AMP in 2010.

Vivek Agnihotri (Member)  
Vivek Agnihotri is an Indian film director, screenwriter, and author. He is a member on the panel of Central Board of Film Certification. His works include ‘The Tashkent Files’ (2019), ‘Buddha in a Traffic Jam’ (2014), ‘Chocolate: Deep Dark Secrets’ (2005), and ‘Hate Story’ (2012).
Films made in any Indian language, shot on 35 mm or in a wider gauge or digital format but released on a film format or video/digital format and certified by the Central Board of Film Certification as a feature film or featurette are eligible for feature film section.
ANDHADHUN (Hindi)
Best Actor (Shared)
Best Hindi Film
अंधाधून (फिल्म)
सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (साँख)
सर्वश्रेष्ठ हिंदी फ़िल्म
AMORI
Best Konkani Film
अमोरी
सर्वश्रेष्ठ कोंकणी फ़िल्म
AWE (Telugu)
Best Make-up Artist
Best Special Effects
आई (तेलुगू)
सर्वश्रेष्ठ मेकअप अण कलाकार
सर्वश्रेष्ठ स्पेशल इफेक्ट्स
BAARAM
Best Tamil Film
बाराम
सर्वश्रेष्ठ तमिल फ़िल्म
BADHAAI HO (Hindi)
Award for Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
Best Supporting Actress
बादहाई हो (हिंदी)
लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन करनेवाली सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म के लिए पुरस्कार सर्वश्रेष्ठ सह-अभिनेत्री
BHONGA
Best Marathi Film
भोंगा
सर्वश्रेष्ठ मराठी फ़िल्म
BULBUL CAN SING
Best Assamese Film
बुलबुल क़ैन सिंग
सर्वश्रेष्ठ असामीया फ़िल्म
CHI ARJUN LA SOW (Telugu)
Best Screenplay (Original)
चिआर्जुन ला सो (तेलुगू)
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (मौरियन)
CHUMBAK (Marathi)
Best Supporting Actor
चूम्बक (मराठी)
सर्वश्रेष्ठ सह-अभिनेता
EK JE CHHILLO RAJA
Best Bengali Film
एक जे छीलो राजा
सर्वश्रेष्ठ बंगाली फ़िल्म
HAMID
Best Child Artist
Best Urdu Film
हामिद
सर्वश्रेष्ठ बच्चा कलाकार
सर्वश्रेष्ठ अर्द्ध फ़िल्म
HARJEETA
Best Child Artist
Best Punjabi Film
हरजीता
सर्वश्रेष्ठ बच्चा कलाकार
सर्वश्रेष्ठ पंजाबी फ़िल्म
HELLARO (Gujarati)
Best Feature Film
Special Jury Award
hELLARO (गुजराती)
सर्वश्रेष्ठ फ़ीचर फ़िल्म
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार
IN THE LAND OF POISON WOMEN
Best Pangchenpa Film
इन द लैंड ऑफ पोइसन वुमन
सर्वश्रेष्ठ पांचचेंपा फ़िल्म
JOSEPH (Malayalam)
Special Mention
जोसफ
विशेष उल्लेख
KADAKH (Hindi)
Special Mention
कड़क
विशेष उल्लेख
KAMMARA SAMBHAYAM (Malayalam)
Best Production Design
कम्मारा सांमाग्रेम
सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन डिजाइन
KEDARA (Bengali)
Special Jury Award
केदारा (बंगाली)
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार
KGF (Kannada)
Best Action Direction Award
Best Special Effects
केजीएफ़ (कन्नड)
सर्वश्रेष्ठ एक्शन निर्देशन पुरस्कार
सर्वश्रेष्ठ स्पेशल इफेक्ट्स
MA'AMA
Best Garo Film
मा'मा
सर्वश्रेष्ठ गारो फ़िल्म
MAHANATI (Telugu)
Best Telugu Film
FEATURE FILMS | AT A GLANCE

ONDALLA ERADALLA (Kannada)
Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration
Best Child Artist

RANGASTHALAM (Telugu)
Best Audigraphy (Re-recordist of Final Mixed Track)

SUDANI FROM NIGERIA
Best Malayalam Film
Special Mention

TARIKH (Bengali)
Best Screenplay (Dialogues)

TENDLYA (Marathi)
Best Audigraphy

TURTLE
Best Rajasthani Film

Best Actress
Best Costume Designer

Best Sherdukpan Film

Best Sherdukpan Film

Best Sherdukpan Film

Best Child Artist

Best Child Artist

NAAL (Marathi)
Indira Gandhi Award for Best Debut Film of a Director
Best Child Artist

NATHICCHARAMI (Kannada)
Best Female Playback Singer
Best Lyrics

PADMAVATY (Hindi)
Best Male Playback Singer
Best Choreography

PADMAN (Hindi)
Best Film on Social Issues

BARVA
Best Editing
Best Kannada Film
Special Mention

NAGIN
Best Sherdukpan Film

RENTHAL
Best Sherdukpan Film

SARKARI HIRIYA PRATHAMIKA_SHALE
KASARGODU (Kannada)
Best Children Film

SUDANI FROM NIGERIA
Best Malayalam Film
Special Mention

TARIKH (Bengali)
Best Screenplay (Dialogues)

TENDLYA (Marathi)
Best Audigraphy

TURTLE
Best Rajasthani Film

Best Actress
Best Costume Designer

Best Sherdukpan Film

Best Sherdukpan Film

Best Sherdukpan Film

Best Child Artist

NAAL (Marathi)
Indira Gandhi Award for Best Debut Film of a Director
Best Child Artist

NATHICCHARAMI (Kannada)
Best Female Playback Singer
Best Lyrics

PADMAVATY (Hindi)
Best Male Playback Singer
Best Choreography

PADMAN (Hindi)
Best Film on Social Issues

BARVA
Best Editing
Best Kannada Film
Special Mention

NAGIN
Best Sherdukpan Film

RENTHAL
Best Sherdukpan Film

SARKARI HIRIYA PRATHAMIKA_SHALE
KASARGODU (Kannada)
Best Children Film

SUDANI FROM NIGERIA
Best Malayalam Film
Special Mention

TARIKH (Bengali)
Best Screenplay (Dialogues)

TENDLYA (Marathi)
Best Audigraphy

TURTLE
Best Rajasthani Film
Hellaro | Best Feature Film
स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 2,50,000/-


**Synopsis** - In 1975, a young Manjri is married off in a small village in the Rann of Kutch. There, she joins a group of women shackled by patriarchal mandates. Their only escape from the suppression is when they go out to fetch water every morning to a distant waterbody. One day, while on their way to fetch water, they find someone in the middle of the desert and their lives are changed forever.

---

** PROFILE **

**Saarthi Productions LLP**

Saarthi Productions LLP, Gujarat is a production company based in Gujarat. Its focus is on producing creative and engaging documentary and fiction. ‘Hellaro’ is its first feature film production.

---

** Abhishek Shah **

Abhishek Shah has been a Casting Director for 15 Gujarati films. He has also been a writer, director, and actor with mainstream theatre for over 18 years. He has also directed TV commercials and promo films.
नाल
निर्देशक की पहली फिल्म के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार
Naal | Indira Gandhi Award for Best Debut Film of a Director

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 1,25,000/-


052 | FEATURE FILMS
**Synopsis** - Chaitanya is an eight-year-old mischievous boy who lives along the banks of a river in a remote village in Maharashtra. He is fathered by a small-time landlord and pampered by a loving and caring mother. ‘Naal’ is about Chaitanya’s emotional world and follows him on an unexpected journey of experiencing motherly love.

---

**Profile**

**Jee Studio** (Zee Studios)

Jee Studio, Jee Entertainment and Zee Studios is a film production and distribution company in India owned by Zee Entertainment Enterprises. The studio makes films in various Indian languages such as Hindi and Marathi, and has also been involved in international production.

---


---

**Citation** - The film is a poignant message about the ethics of adoption, told through a child’s perspective.
बधाई हो
लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली
सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म

Badhaai Ho | Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 2,00,000/-

Kathasar - 25 साल के नकुल कौशिक की ओढ़ उसकी मां के गर्भवती होने की खबर से पूरा कौशिक परिवार सदने में आ जाता है। सभी अब इस परिवार के बारे में बात कर रहे हैं जिससे उन्हें एक सामाजिक शर्मिण्डगी का सामना करना पड़ता है। नकुल मायुक्ता और नाराजगी के असंयोग में झूलता रहता है और उसके अपने माता-पिता, भाई-तत्त्वाता दादी, छोटे भाई और मामूली सहकर्मियों से उसके साथ संबंधों में उत्तर – वद्य आते हैं। यह लोगों से मिलने वाली शर्मिण्डगी और अपने परिवार, खासकर अपनी मां के प्रति प्रेम में खुद को बंटा हुआ पाता है। बाद में वह अपने माता-पिता के निजी जीवन और परिवार के इस नए स्वरूप को स्वीकार कर लेता है।

Synopsis - The news of 25-year-old Nakul Kaushik’s middle-aged mother’s pregnancy comes as a shock to the entire Kaushik household. Everyone's gaze is now turned towards the family which has to deal with social embarrassment. What follows is a phase of resentment and emotional confusion for Nakul as he goes through ups-and-downs in his relationships with his father, mother, feisty grandmother; teenaged brother, fiancée-colleague Renee and others. Torn between public embarrassment and love for his family, especially his mother, he tries to come to terms with the idea of his parents' active sex life and the idea of family itself.

परिचय
अमित शर्मा (Amit Sharma)

Amit Sharma is an ad filmmaker and film director. He has directed over 1200 commercials for top brands. His directorial debut film was 'Tevar' (2015).

PROFILE
जंगली पिक्चर्स, क्रोम पिक्चर्स

Junglee Pictures is a film production and distribution company.

Chrome Pictures is a film production house based in Mumbai.

प्रशिक्षण – यह फ़िल्म अंतर्जातियों में गर्भवती होने के लेकर बनी स्वेटकी धारणा को एक नए उपादन, प्रभावी चरित्रकल्पना और अभिनेताओं के जरिए सोचती है।

Citation - The film breaks the stereotype of middle age pregnancy through easy narrative, effective characterization and pithy dialogues.
ओन्दल्ला इरेदल्ला
राष्ट्रीय सद्भाव और एकता के लिए
सर्वश्रेष्ठ फ़ीचर फ़िल्म को नर्गिस दत्त पुरस्कार

Ondalla Eradalla | Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,50,000/-

**Synopsis** - Seven-year-old boy Sameera accidentally loses his beloved pet Banu. While searching for Banu, Sameera reaches a town called ‘Pete’ and is all alone. He meets many people from different sections of the society. Will innocent Sameera get reunited with his pet among the selfish people? The film tries to emphasise on the fact that helping each other is mantra to be happy and content in life.

---

**Parichay**

**D. Satya Prakash**

D. Satya Prakash is a Kannada filmmaker, screenwriter, and producer. His work stands out for its focus on social issues and human relationships.

---

**Profile**

**DN Cinemas**

DN Cinemas is a production house owned by Smith N. It is a sister concern of Umapathy Films which previously made Kiccha Sudeep-starrer hit film, ‘Hebbuli’ (2017).
पैड मैन
सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म
Pad Man | Best Film on Social Issues
रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,50,000/-

kaharia - लक्षणात्मक को ये बात बहुत परेशान करती है कि उसकी पत्नी गायत्री, पीड़िता के दौरान अस्थायी कपड़ों का इस्तेमाल करती है। वे सैनिटर पैड्स की एक मशीन बनाने का प्रयास करता है जिससे उसके दाम कम हो सके और इस प्रक्रिया में इस पुड़े पर जागरूकता पैदा करने में मदद करता है।

Synopsis - Laxmikant is upset when he sees wife Gayatri using an unhygienic cloth during her periods. He decides to create a machine that could make sanitary pads at an affordable price, and in the process helps creating awareness on the issue.

परिचय

आर. बालकृष्णन (R. Balakrishnan)

आर. बालकृष्णन, जो आर. बाल्की के नाम से चिंतित है एक फिल्मकार, स्क्रीनवर्ती और विभाग एवं लोक संगीत (भारत) के पूर्व समुदाय के प्रमुख अध्यक्ष हैं। वे अपनी अनेक धर्म और मराठी बनाए गए फिल्मों के लिए जाने जाते हैं जैसे 'चीनी कदम' (2007), 'पाा' (2009) और 'पैड' (2018)।

R. Balakrishnan, popularly known as R. Balki, is a filmmaker, screenwriter and former Group Chairman of the advertising agency Lowe Lintas (India). He is best known for directing offbeat films like ‘Cheeni Kum’ (2007), ‘Paa’ (2009) and ‘Pad Man’ (2018).

प्रशिक्षण – महिलाओं के निजी स्वास्थ्य से जुड़े अनकांड पद्धतियों को यह फिल्म एक समानहोक कथानक द्वारा, सहजता से दर्शाती है।

Citation - An undiscussed social issue of women personal hygiene is narrated compellingly and with aplomb.

PROFILE

होप प्रोडक्शन्स प्राइवेट लिमिटेड एवं टिंकल्क खन्ना

[Hope Productions Pvt. Ltd. & Twinkle Khanna]

होप प्रोडक्शन्स प्राइवेट लिमिटेड प्रोडक्शन कंपनी है जिसके खिलाफ मंगल (2019), 'पैड' (2018), 'दियर जिंडगी' (2016), 'इंग्लिश विंगलिश' (2012) जैसी फिल्मों शैलित है।


Twinkle Khanna is an Indian author, newspaper columnist, film producer and former film actress.
Paani | Best Film on Environment Conservation / Preservation

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,50,000/-

Marathi | 148 Mins | Director: Addinath M. Kothare | Production Company: Purple Pebble Pictures | Screenplay: Nitin Dixit
Editor: Addinath M. Kothare | DOP: Arjun Sorte | Cast: Addinath M. Kothare, Subodh Bhave, Rajat Kapoor, Girish Joshi, Rucha Vaidya

060 | FEATURE FILMS
कथासार - सुखाप्रसा नागदरवाडी गांव में महिलाओं को रोजाना पानी लाने के लिए चार फिल्मी सौर पेडल चलकर जाना पडता है। जब सुखाप्रसा नागदरवाडी के मता-पिता को इस मुख्य कार्यक्रम का आत्मा होता है, तो वे उसकी समाज में इस गांव के लड़के हुमंगं कंट्री से लोड़ देते हैं। हुमंगं को सुखाप्रसा से पार है और वो बच्चा करता है वो उसके तब तक शादी नहीं करना जाना जब तक उसके गांव के हर घर में पानी पद्धति नहीं जाता। सबसे कहानी पर आधारित पानी एक पार ने पड़े आम आदमी की कहानी है जो अपने आसपास की दुनिया का बदलने के संघर्ष को बयान करती है।

Synopsis - In drought-hit Nagdarwadi village, women have to walk four kms to fetch water every day. When Suvarna Nagargose’s parents discover this hardship, they call off her engagement with village boy Hanumant Kendre. Hanumant, already in love with Suvarna, resolves to marry her only but after bringing water at every doorstep in his village. Based on a true story, ‘Paani’ (Water) is about a common man’s struggle to change the world around him, driven by love.

परिचय
आदिनाथ एम कोथारे (Addinath M. Kathare)

Addinath M. Kathare is a Marathi film actor and producer. He made his directorial debut with ‘Paani’ in which he also played the protagonist. He has a acted in over 15 feature films.

PROFILE
पर्पल पिबल पिक्चर्स (Purple Pebble Pictures)

Purple Pebble Pictures is a film production company established by actress and producer Priyanka Chopra. It has produced several films – including three National Award-winning ‘Ventilator’ (2016), web series and television serials.
सरकारी ही प्रा शाले, कसारागोड़ु
सर्वश्रेष्ठ बाल फ़िल्म

Sarkari Hi. Pra. Shaale, Kasaragodu | Best Children’s Film

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 1,50,000/-

Kannada | 149.16 Mins | Director: Rishab Shetty | Production Company: Rishab Shetty Films | DOP: Venkatesh Anguraj | Cast: Anant Nag, Ranjan, Sampath, Pramod Shetty, Saphia, Prakash Thuminad
Крахран - фильм кхадни кералх кхасараху мэй эн кханна макхи скхул кэ бхвх кэ жинди кэ дарханирdu кинхи эй буки эй гаан. Вэра кэ бхвх кэ жинхи кэ шарахи кэ шарахи жинди кэ тан раг дэж жакти гаан. Хуку кхулу схалхи скхул кэ мэй кэ дэй. Фильм бхвх кэ тан схапатик кашнаано схарии эй гаан. Жисхи жарийгэ дэж скхул кэ бхахатэ гаан.

Synopsis - The film revolves around the lives of children of a Kannada-medium school in Kasaragodu, Kerala in India. The joyous and mischief-filled lives of the kids are brought to a halt when some greedy government officials try to shut down the school. The film captures an adventure-filled endeavour of the children to save their school.

**Pariyachy**

Rishabh Shetty (Rishabh Shetty Films)

Rishabh Shetty is a director and actor who primarily works in the Kannada cinema. He has earlier directed two films, ‘Ricky’, and ‘Kirk Party’ which won many awards for the director including the Filmfare award. ‘Sarkari Hi. Pra. Shaale, Kasaragodu’ (SHPSK) is his third film.

**Profile**

Rishabh Shetty Films is a production house predominantly working in Kannada film industry. It was established in the year 2016 and ‘Sarkari Hi. Pra. Shaale, Kasaragodu’ (SHPSK) is its first film production.

**Praashit** - वह फिल्म बच्चों द्वारा राजकीय सीमाओं पर निर्भर स्कूलों में भाषा के कारण होती राजनीति पर किया गया।

Citation - The film effectively portrays the positive action of children to tackle the issue of language politics in schools located on State borders.
रेवा  
सर्वश्रेष्ठ गुजराती फ़िल्म  
Reva | Best Gujarati Film  
रजत कमल  | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Кथासार - 25 साल के अभावसी भारतीय करण के दादा गुजरने से पहले अपनी सारी दीलता और वसीयत गुजरत मन में नर्मदा के किनारे बसे एक आश्रम को दान कर देते हैं। अपनी पैतृक संपत्ति हासिल करने का करण के पास अब एक ही जरिया है, उसे आश्रम के लोगों को अनापन्यता पत्त्र (नी आवेशक टेक्टंटिके) पर दर्शाते करने के लिए मनाना होगा। करण भारत आता है और दूसरी ऊय मौजूद आश्रम के सफर पर निकलता है, जहां उसका सामना नदी किनारे रहने वाले वस्त्रिय लोगों, मछली, संतों से होता है। वो संस्कृति, उद्योग, आस्था को समझने की कोशिश करता है, जो उस गरीब से बिन्दुल ही अलग है जहां पर वो पल बढ़ा है। हालांकि वो अपने स्वर्ण को पूरा करने में सफल हो जाता है लेकिन इसे खुद को लेकर एक कढ़ी सच्चाई का नी अहसास होता है और उसके अंदर मौजूद सारा महंगा और लालच बुझ जाता है।

Synopsis - Twenty-five years old NRI Karan’s grandfather passes away, giving away all his wealth in his will for charity to an Ashram located on the banks of Narmada river in Gujarat. Now, the only way Karan could redeem his ancestral wealth was by convincing the Ashram to sign a No Objection Certificate. Karan comes back to India and embarks on a journey to the remote Ashram. There, he comes in touch with locals living on the river bank, devotees and saints. He tries to understand the culture, customs and beliefs which are different from where he was brought up. Though he succeeds in his ‘selfish work’, he also comes to know of a bitter truth of his existence and he loses all his ego and greed.

**राहुल ब्होले**
Rahul Bhole has directed over 15 short films, documentaries, ad films and corporate films. He has written more than 400 episodes for a Gujarati TV show.

Vinit Kanojia is an award-winning independent film and documentary maker.

**ब्रॉन्क्स स्ट्यूडियोज**
Brainbox Studios is a Gujarat-based film production company founded by Paresh Vora. Its first feature film production is ‘Reva’.

**परिचय**

Vinod Kanojia, Rahul Bhole (Rahul Bhole, Vinit Kanojia)

Rahul Bhole has directed over 15 short films, documentaries, ad films and corporate films. He has written more than 400 episodes for a Gujarati TV show.

Vinit Kanojia is an award-winning independent film and documentary maker.

**PROFILE**

**Brainbox Studios (Brainbox Studios)**

Brainbox Studios is a Gujarat-based film production company founded by Paresh Vora. Its first feature film production is ‘Reva’.

**श्रेणी -** फिल्म एक विदेश में बने भारतीय का सांस्कृतिक से आधारित होने का सफर दर्शाती है।

**Citation -** The film depicts the transformation from material to spiritual journey of an NRI.
Harjeeta | Best Punjabi Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Synopsis - ‘Harjeeta’ is based on the remarkable true story of an underdog who fights against all odds to come out as a winner. Harjeet Singh, son of a truck driver, overcame acute poverty to become a professional Indian hockey player. He went on to captain the Indian squad at the 2016 Men’s Hockey Junior World Cup where India eventually won a Gold medal after 15 years.

Vijay Kumar Arora, aka Vijay Arora, is a cinematographer. He turned director with ‘Ronde Sare Vyah Picho’ (2013), followed by ‘Harjeeta’ (2018) and ‘Guddiyan Patole’ (2019). He has to his credit as a cinematographer over forty films.

Sizzlen Productions is a film production house owned by Munish Sahnii. He has produced and co-produced Punjabi movies such as ‘Harjeeta’, ‘Ashke’, ‘Golak Bugni Bank Te Batua’, ‘Dil Diyan Gallan’.

Citation - A biopic of a Hockey player, who struggles through his rural background and poverty to rise to the top of his game.
Bulbul Can Sing | Best Assamese Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Kathasar - सूरजवत और सुरुवात की रोहनी में बुड़ी यह फिल्म तीन ऐसे दोस्तों की कहानी है जो युवावस्था की दहलाह पर है। कहानी की प्रमुख विदर्भ है एक बुड्डी जो लोगों के सामने आती ही गा नहीं पाती। बोनी और सुमन को असफलता के बाद और खुद पर अविश्वास ने घेर कर रखा है क्योंकि वह गुरु की पारंपरिक चर्चा पर खरे नहीं उठते, पहले यहां के अनुभव ने इन तीनों को धमकों और नैतिकता के दबाव में डाल दिया है। भाग और दर्द से गुजरती बुड्डी खुद के करीब से जान पाती है और गाना गाती है।

Synopsis - In the atmospheric light of dusk and dawn, the film portrays the lives of three friends on the threshold of adulthood. The story’s protagonist is Bulbul, the nightingale, whose voice fails her when she has to sing in front of people. Fear of failure and self-doubt also plague the fragile Bonny, and Suman, who does not fulfill the traditional male image.

The experience of first love puts the three teenagers under the pressure of high expectations and strict moral codes. Going through love and sufferings, Bulbul figures out who she is and begins to sing.

### परिचय

#### Rima Das (Rima Das)

Rima Das is a self-taught filmmaker, screenwriter, producer, director, cinematographer and editor for her films. Her film 'Village Rockstars' (2017) was screened at over 80 film festivals and bagged over 50 Awards including the National Film Awards as the Best Feature Film and was India’s Official Entry to the Oscars in 2018.

### प्रमाणित – असम की पृथ्वीपुरि में नौजवानों के एक गुप्त की कहानियां, महान और उम्मीदों को प्रस्तुत करने के लिए।

Citation - For capturing the trials, tribulations and aspirations of a group of teenagers in a rural Assamese backdrop.

### प्राक्कल्प

**Flying River Films**

Flying River Films is a production house based in Assam and Mumbai in India. Focusing on tapping indigenous and creative independent filmmakers, Flying River Films endeavours to bring beautiful films to the forefront.

**Flying River Films**

Flying River Films असम और मुंबई स्थित एक प्रोडक्शन हाउस है जो खासगी पर सर्वनामक स्तर पर फिल्मकारों और एड डिजाइनर वीडियो सुधारकों पर काम करता है। इसी प्रकार की विदेश कई विदेशी फिल्में सामने आ पड़ी हैं।

**Flying River Films** is a production house based in Assam and Mumbai in India. Focusing on tapping indigenous and creative independent filmmakers, Flying River Films endeavours to bring beautiful films to the forefront.
अमोरी
सर्वश्रेष्ठ कोंकणी फ़िल्म

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Synopsis - Shirish Kelekar left Goa and got settled in London 25 years ago. One day, his past comes back to haunt him, taking him all the way back to his native place. Now, he must deal with broken family ties, a powerful politician and most importantly, the harsh reality of the village resources. Can he make the community aware of something it has ignored for so long? The film shows how people working for the betterment of society often face resistance from various quarters along with the negligence of the ecosystems.

Dinesh Bhole is a director, producer and screenplay writer in the Marathi film Industry. He is an audio-visual artist with an academic background in theatre. He won a National Film Award for his film ‘Enemy?’ (2015).

Opus Gala is an association formed to Promote Art & Culture by imparting knowledge through the establishment of institutions and organising events.
Nathicharami | Best Kannada Film

राजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

KATHA - ये फिल्म एक ऐसी नाटिका की निजी घटनाओं पर आधारित है जिसका जीवन और बाकी सब कुछ शारीरिक जल्दी से जुड़ी सामाजिक वर्जनाओं में फंसा हुआ है। गौरी एक आँखी, पदी लिखी, आलोचित विषय है जो आई दो सेक्टर में काम करती है। वहीं सुरेश अपनी शादीशुदा घटना से नखुए मौत के पार करने की तलाश में है। क्या होता है जब गौरी और सुरेश मिलते हैं और किसी तरह से वो एक दूसरे को समझ पाते हैं, उन्हें सुरक्षा की जरूरत के लिए सोचना होगा:

SYNOPSIS - This film is woven around the female protagonist whose personal life and her overall being is stuck within the social taboos related to carnal desires. Gowri is a modern, well-educated, independent widow, working in the IT sector; while Suresh leads an unhappy married life who is on a quest to find the love of his life. What happens when Gowri and Suresh meet; and how do they come to terms with each other mark the essence of ‘Nathicharami’.

PARICHAY

MANSORE (Mansore)

Mansore, aka Manjunatha Somaksha Reddy, is a visual artist-turned-filmmaker in Kannada cinema. His debut film ‘Harivu’ (2014) won the National Awards for best regional film in 2015. ‘Nathicharami’ has won five National Film Awards and other accolades.

PROFILE

TEJASWINI ENTERPRISES (Tejaswini Enterprises)

Tejaswini Enterprises, headed by Ramesh Reddy, is an independent film production house focused primarily on the parallel wave of Kannada cinema. It is one of the main production studios in Kannada film industry with complete set up of filmmaking.

Citation - Poignantly and sensitively capturing a modern day women's conflict with set norms, mores and values.

PRAASAR - एक आधुनिक महिला का ताे तनक और नैतिक विचारों से झुकना, जिसे स्कैप और संवेदना से दर्शाया गया है।
Mahanati
Sarveshresha Telugu Film

Rajat Kamal | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Kathasar - Mahanati, a visionary film that challenges the norms of the 20th and 60s has been lauded in the film industry. The film highlights the challenges faced by the younger generation of actors and actresses in the industry.

Synopsis - ‘Mahanati’ chronicles the life of legendary southern actor Savitri who took the film industry by storm in the late 50s and 60s. The film goes through various tragic incidents in her personal life, and how she stood up against all odds and the result of her choices in life.

Parichay

Nag Ashwin Reddy (Nag Ashwin Reddy)

Nag Ashwin Reddy is an Indian film director and screenwriter known for his works in Telugu cinema. He made his directorial debut in 2015 with the coming-of-age philosophical drama ‘Yevade Subramanyam’. ‘Mahanati’ is his second feature film.

Profile

Swapna Cinema (Swapna Cinema)

Swapna Cinema is an entertainment company founded by Swapna Dutt and Priyanka Dutt in association with Vyjayanthi Films.

Prashasti - A major Telugu actress who has been the face of the industry has gone public.

Citation - Biopic of a great Telugu actress effectively told.
Sudani From Nigeria | Best Malayalam Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Malayalam | 124 Mins | Director: Zakariya Mohammed | Production Company: Happy Hours Entertainments | Screenplay: Zakariya Mohammed, Muhsin Parari | Editor: Naufal Abdullah | DOP: Shyju Khalaf | Cast: Saubin Shahir, Samuel Abiola Robinson
**Synopsis** - Majid, a typical football lover from Malappuram in Kerala, works as a recruitment agent of foreign players for local tournaments. When Samuel, a Nigerian footballer hired by him, suffers a severe back injury and is advised two months’ bed rest, Majid is obliged to take him home. Ecstatic to host a foreign footballer and common love for football, Majid’s relatives and neighbourhood shower their love on Samuel. But soon the beautiful story of friendship is disrupted by the state officials in the name of law.

**Profile**

**Zakariya Mohammed**

Zakariya Mohammed is an Indian film director, writer and actor who works in Malayalam Films. He is from Valanchery, Malappuram. Zakariya is best known for his directorial debut ‘Sudani from Nigeria’.

**Happy Hours Entertainment**

Happy Hours Entertainment is a film production company associated with the Malayalam film industry. It was established by acclaimed cinematographers Sameer Thahir and Shyju Khalid, and its first film ‘Neelakasham Pachakadal Chuvanna Bhoomi’ released in 2013.

**Citation** - With a backdrop of sports, the film explores the complexity of emotions in a mother-son’s relationships.
Ek Je Chhilo Raja | Best Bengali Film

राजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Editor: Pronoy Das Gupta | DOP: Gairik Sarkar | Cast: Jisshu U. Sengupta, Jaya Ahsan, Anjan Dutt, Aparna Sen, Rudranil Ghosh, Anirban Bhattacharya, Rajnandini Paul
**Synopsis** – ‘Ek Je Chhilo Raja’ is a subtle take on what happens when Feudal India meets Spiritual India. In 1909, British India was a heady concoction of feudalism and early nationalism. In this backdrop, a feudal lord is poisoned in a conspiracy, but escapes cremation by slipping out of coma. Twelve years later, an ascetic with uncanny physical similarities returns to claim his kingdom and takes on the British in a British court defended by a nationalistic Indian lawyer. What follows is an incredible saga from the annals of Indian judicial history.

---

**PROFILE**

**Srijit Mukherji** is a filmmaker, screenwriter and lyricist. His ‘Jaatishwar’ won four National Film Awards in 2014, while ‘Chotuskone’ won two in 2015. His ‘Rajkahini’ and ‘Uma’ were selected for IFFI.

**SVF Entertainment** is Eastern India’s largest entertainment company. It has produced over 135 films including National Award-winning ‘Chokher Bali’ and ‘Raincoat’.

---

**Citation** - Based on a true story, the film traces the journey of a Maharaja through his quest for identity.
हामिद
सर्वश्रेष्ठ उर्दू फ़िल्म
Hamid | Best Urdu Film
रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-


080 | FEATURE FILMS
Synopsis - The number 786 always bewildered eight-year-old Hamid. One day a teacher tells him that this is God’s number. Trying different combinations on his missing father’s old mobile phone, he gets connected to a person he believes is God. On the other side is Abhay, a CRPF jawan who is disinterested initially but ends up entertaining Hamid. These two, unknowingly and unintentionally, change each other’s world for the better.

PROFILE

Siddharth Anand Kumar

Siddharth Anand Kumar, the director of the film ‘The White Elephant’, presented the film at the International Film Festival of India (IFFI). It traveled to more than 10 film festivals. He was also part of the National Film Awards jury in 2010. He also directed the feature film ‘Baankey Ki Crazy Baraat’ in 2015.

Citation - A child’s perspective of religion and life, as he searches for his lost father.
अंधाधुन
सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फ़िल्म
Andhadhun | Best Hindi Film
रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

KETHASAR - आकार एक नेत्रहीन यानी देखने है जो जयंत न्यूयॉर्क केंद्र के लिए तैयार कर रहा है। अचानक हुई एक मुलाकात के बाद, सोफी और आकाश दोनों बन जाते हैं, उससे प्यार बनाने के हुए जो पहचानते हुए, सोफी उससे अपने पिता के रेस्टोरेंट में ले जाती है जहां उसे नौकरी मिल जाती है। इसी रेस्टोरेंट में आकाश की मुलाकात एक गुर्जर अपाने के एक अभिनेता प्रमोद सिंहो से होती है, जो उससे अपनी पत्नी की सीमा के लिए निकली तीन पर प्यार बनाने का आग्रह करता है। वो अपनी पत्नी को एक सर्कलाइज़ देना चाहता है। सिंह्या के घर पर, आकाश जो शायद ये दर्शाता है कि वो नेत्रहीन है, ना चाहते हुए पूरी अभिनेता के कल्प का गायक बन जाता है और जाने ना अंजाने कई समस्याओं में पिल्ला।

Synopsis - Akash, a blind piano player, is preparing for a London music concert. After an accidental encounter, Sophie and Akash become friends. Recognising his talent as a pianist, Sophie takes him to her father's restaurant where he lands up a job. At the restaurant, Akash meets a yesteryears' actor Pramod Sinha who asks him to do a private piano session for his wife Simi, as a surprise present to her. At Sinha's house, the murder of the former film actor takes place as Akash plays the piano. Akash, who may be pretending to be visually-impaired, unwittingly becomes entangled in a number of problems soonafter.

परिचय

श्रीराम राघवन (Sriram Raghavan)

Sriram Raghavan is an Indian film director and screen writer. He is a graduate of Film and Television Institute of India (FTII), Pune. His diploma Film ‘The Eight Column Affair’, won National Film Award for Best Short Fiction Film in 1987.

वायाकॉम 18 स्टूडियोज़ (Viacom18 Studios)

Viacom18 Studios, a subsidiary of the Mumbai-based Viacom 18, is one of the first studio model-based motion picture and content production business in India.

Citation - The film is a judicious mix of intrigue and creativity.
बारम
सर्वश्रेष्ठ तमिल फ़िल्म
Baaram | Best Tamil Film
रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Tamil | 92 Mins | Director, Screenplay & Editor: Priya Krishnaswamy | Production Company: Reckless Roses | DOP: Jayanth Mathavan | Cast: R. Raju, Sugumar Shanmugam, SuPa Muthukumarm, Jayalakshmi, Stella Gobi
Synopsis - Karuppasamy, a widowed night watchman, lived with his sister and three nephews – Veera, Mani and Murugan – at a small town in Tamil Nadu. While returning from his shift one morning, he breaks his hip in an accident. While his nephews want him to be treated in town, his son Senthil takes him to his ancestral village for a treatment by a traditional healer. After eight days, Karuppasamy dies. At his funeral, Veera hears something that makes his blood run cold. How did Karuppasamy die…?

Profile

Reckless Roses (Reckless Roses)


Reckless Roses is a production house known for producing


Priya Krishnaswamy (Priya Krishnaswamy)


Citation - A man’s fight to expose the traditional practice of euthanasia in a Tamil village.
भोंगा
सर्वश्रेष्ठ मराठी फ़िल्म
Bhoangaa | Best Marathi Film
रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Kathasar - In a village, the muezzin speaks on a loudspeaker, a nine-month-old child is unable to sleep and cries incessantly. His family realises that the child is suffering due to the loudspeaker’s noise. They request the Mosque’s muezzin to call Azaan without the loudspeaker or shift it, but he declines. One day the child dies, leaving the villagers shocked. His father blames the muezzin and asks him to stay away from the child’s funeral. Remorseful, the muezzin begins to give Azaan without a loudspeaker.

Shivaji Lotan Patil (Shivaji Lotan Patil)

Shivaji Lotan Patil is a Marathi and Hindi film director. He made his directorial debut with ‘Vavtal’ in Marathi and ‘K-5’ in Hindi. His next film 'Dhag' 2014 won three National Film Awards.

Profile

Nalinee Productions (Nalinee Productions)

Nalinee Productions is a Mumbai-based film production company.
Ma. Ama | Best Garo Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Synopsis - For 30 years since the death of his wife, Philip, 85, had lived every day in hope to be reunited with her in the afterlife. But his yearning is jeopardized by a dream in which he searches for his wife among the crowd of women in a barren landscape. Despite putting in a lot of efforts, he is not able to recognise his wife's face in the crowd. Tormented by the doubt, he wonders if death will change their appearance with time. He still puts in all his effort to ensure a reunion with his wife in the afterlife.

Dominic Megam Sangma is a graduate from Satyajit Ray Film and Television Institute (SRFTI), Kolkata, West Bengal. He worked with the National Film and Development Corporation (NFDC) for two years, before he started his own production company called Anna Films.
Mishing
Best Sherdukpen Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Synopsis - Tagbe Mahajan, a leading member of the Sherdukpen community of Arunachal Pradesh, meets a driver Radha Binode Singh after buying a used vehicle in Assam. Soon, Singh becomes a part of Tagbe’s family. One day, Singh sees himself dead at the wheels of his own car. Alarmed and baffled, he flees. Many years later, Tagbe’s son Abu receives a middle-aged visitor claiming to be Singh. He asks Abu to visit him in Guwahati and collect a precious object that Tagbe left in his custody. He then disappears without a trace. Abu heads to Guwahati. There, he meets Singh’s son. The latter hands over Tagbe’s possession to the visitor. Abu learns that Singh has been in a hospital in Vellore, southern India, for several months. Who, then, was the man who visited Abu?

**Parichay**

**Bobby Sarma Baruah**

Bobby Sarma Baruah is a filmmaker, researcher, producer and screenwriter. Her debut feature was ‘Adomya’ (Indomitable), followed by ‘Sonar Baran Pokhi’ (The Golden Wing). ‘Mishing’ is her third film, which won her the Silver Lotus Award in the 66th National Film Award.

**Profile**

**BB Entertainment Trade Private Limited**

BB Entertainment Trade Private Limited is a film production company based in Kamrup, Assam owned by filmmaker Bobby Sarma Baruah.

**Praashti** - Film Akhurashal Pradesh के एक अदृश्य गाँव की दूसरी पहचान बनाती है।

**Citation** - The film explores the alternative reality of a remote village in Arunachal Pradesh.
In the Land of Poison Women | Best Pangchenpa Film

राजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Synopsis - In an isolated dwelling on a hillock, lived an old couple Sangra and Lusang, whose two children and four others had died after consuming a local wine prepared by Lusang. She is ostracised by her community over their superstitious belief of her being a daumoh, a poison woman. Thupten, an intelligence officer and Tashi Yudan, a circle officer—both from the same tribe—visit the couple. As Lusang lies in her deathbed, Sangra, in the presence of everybody, reveals a long-hidden secret which vindicates ‘daumoh’ Lusang, and she dies peacefully.

**PROFILE**

**Aas Productions**

Aas Productions makes content for motion pictures, radio, television, etc. It is helmed by Manju Borah, Rajen Bora, Ananya Borah and Jiban Dawkha.

**Manju Borah (Manju Borah)**

Manju Borah is a film writer and producer. She wrote and produced the film ‘Baibhab’ (1999) and ‘Dau Huduni Methai’ (2015).

Manju Borah made her directorial debut feature ‘Baibhab’ in 1999, which won a National Film Award. Her other NFA winning films include ‘Aakashitorar Kothare’ (2003) and ‘Dau Huduni Methai’ (2015).

**Prasiddha -** गकिल आकाशीतार कथा के संस्कृति की महत्वपूर्ण पुरस्कार विजेता हैं।

Citation - The file is a depiction of an individual's effort to break the myth of “poison women” of remote parts of Arunachal Pradesh.
Turtle | Best Rajasthani Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Rajasthani | 71.30 Min. | Director: Dinesh S. Yadav | Production Company: Shivazza Films & Entertainment | Writer: Dinesh S. Yadav | Cast: Sanjay Mishra
KETHSAR - A local man and a woman take part in a competition for the best seller of the week. The film, however, is based on a real-life event in Ramgarh. The town of Ramgarh is located in a desert area and the people there are desperate for water. They use whatever means they have to get water. The film is based on a true story of a local man and a woman who are determined to win the competition and get water for their village.

Synopsis - In a folk tale, a turtle digs the earth to reach the water. The film is a metaphorical depiction of the turtle. In a drought-stricken village of Rajasthan, Ramkaran Chowdhary is churning the parched, sun-baked earth, to extract water. Desperate to quench their thirst, the common folk there also indulged in a tug of war, rotating on his shell. By bring water for the villagers, Ramkaran also wants to prove that his grandson was not unlucky for the village as many thought that the village wells dried up soon after the birth of his grandchild.

नवाल - एक लोक नवाल एक कहानी पानी लेकर यह दुनिया देता है। फिल्म इस कहानी का रूपांतरण है। राजस्थान के एक सुख जगत इनके मे रामगढ़ की चौथी एक सुबही मजबूती से पानी निकालने की कोशिश कर रहा है। लोक कथा में एक रस्ता साझा तो रहती है जिसमें जाने लोग पानी खोजने की कोशिश कर रहे है। गांव चालकों के लिए पानी लाकर रामगढ़ कहां न कहां ये भी तारीख करना बाहर है। उसका पता बदकिस्मत नही है क्योंकि व्यावसायिक गांव चालकों को लगता है कि उसके पोते के जन्म से जाने तक कुछ सूख गया था।

Profile - Shivazza Films & Entertainment is founded by Ashok Choudhary. The production house has so far produced three films: ‘I’m a girl’, ‘Wah Zindagi’ and ‘Turtle’.

Citation - Based on a popular Rajasthani folk tale, the film deals with an issue of water crises.
उरी: द सर्जिकल स्ट्राइक
सर्वश्रेष्ठ निर्देशन
स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 2,50,000/-

Hindi | 138 Mins | Director: Aditya Dhar | Production Company: Unilazer | Editor: Shivkumar Panicker | DOP: Mitesh Mirchandani | Cast: Vicky Kaushal, Paresh Rawal, Yami Gautam

आदित्य धर

Aditya Dhar has been a lyricist, writer, and assistant director and worked in films like ‘Kabul Express’ (2006), ‘Aakrosh’ (2010), and ‘Tezz’ (2012). He made his directorial debut with ‘Uri: The Surgical Strike’. His short film as a screenplay and dialogue writer named ‘Boond’ (2009) had also won a National Film Award.

प्रश्नांश – एक सच्ची सैन्य कार्यवाही को वास्तविक रूप से दर्शाना और उसके सहज और प्रभावकारी होने को सुनिश्चित करना एक कठिन मुद्दा होता है, जिसे इस फिल्म ने बहुत करीब निभाया गया है।

Citation - The challenge of telling a true story of military action in a realistic manner is dealt with utmost clarity and effectiveness.

Synopsis of the film on page no. 136

096 | Feature Films
अंधाधुन
सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (साज्जा)

Andhadhun | Best Actor (Shared)

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-


आयुष्मान खुर्राना
आयुष्मान खुर्राना एक जानेमाने भारतीय अभिनेता, गायक और मॉडल हैं। उनकी कुछ चरित्रित फिल्मों में 'विकी डोनर' (2012), 'दन लगे के हइशा' (2015), 'बरेली की बकरी' (2017), और 'बच्चाई हो' (2017) शामिल हैं।


प्रशासित – एक जटिल किरदार जो ‘अभी जैसा है, अभी नही’ के सस्तक अभिनय के लिए।

Citation - For powerful execution of a complex role of 'now blind & now not blind' character.

Synopsis of the film on page no. 132
उरी: द सर्जिकल स्ट्राइक
सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (साझा)

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | 138 Mins | Director: Aaytiya Dhar | Production Company: Unilazer | Editor: Shivkumar Panicker | DOP: Mitesh Mirchandani | Cast: Vicky Kaushal, Paresh Rawal, Yami Gautam

विकी कौशाल
विकी कौशाल एक हिंदी फिल्म अभिनेता है जो राजी (2018), संजू (2018), मनमार्जिया (2018) और उरी: द सर्जिकल स्ट्राइक (2019) के लिए जाने जाते हैं। इन्हें उरी के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिल चुका है और संजू के लिए फिल्म सेन्स पुरस्कार। एस्थन निर्दिष्टक शाम कौशाल के बेटे विकी, आनागण कृतियों को गैंस ऑफ वासियन्त (2012) में सहायक के रूप में काम करने के बाद उन्हें मसान (2015) में अपना पहला बड़ा रोल मिला था।

Vicky Kaushal is a Hindi film actor known for his films like 'Raazi' (2018), 'Sanju' (2018), 'Manmarziyaan' (2018), and 'Uri: The Surgical Strike' (2019). He won a National Film Award for ‘Uri’ and a Filmfare Award for ‘Sanju’. Born to the action director Sham Kaushal, he assisted Anurag Kashyap in his crime drama ‘Gangs of Wasseypur’ (2012) before bagging his first leading role in the film ‘Masaan’ (2015).

प्रशिक्षित – एक अभिनेता अकसर के किरदार को वास्तविक रूप से पर्याप्त प्रस्तुति के लिए।
Citation - For effectively conveying a realistic character of an army officer.

Synopsis of the film on page no. 136
Mahanati | Best Actress

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-


Keerthy Suresh

Keerthy Suresh is a film actress who has appeared in Tamil, Malayalam and Telugu films. She began acting as a child artist in the early 2000s and played her first lead role in the 2013 Malayalam film 'Geethaanjali' for which she won several state awards.

प्रशंसित – एक लम्बी समय सीमा में अनेकानेक भावनाओं को उड़ाने के लिए।
Citation - For a range of emotions across vast span of time.

Synopsis of the film on page no. 134
Chumbak

Best Supporting Actor

Rajat Kamal | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Marathi | 118 Mins | Director: Sandeep Modi | Production Company: Cape of Good Films | Screenplay: Saurabh Bhave, Sandeep Modi | Editor: Chandrashekhar Prajapati | DOP: Rangarajan Ramabadran | Cast: Swanand Kirkire, Sahil JadHAV, Sangram Desai

Swanand Kirkire

Swanand Kirkire is a lyricist, playback singer, writer, assistant director, actor and dialogue writer, both in television and Hindi films. He has twice won the National Film Award for Best Lyrics in 2006 ('Lage Raho Munna Bhai') and 2009 ('3 Idiots').

Citation - For the ability to invoke empathy in the audience.
बधाई हो सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेत्री
Badhaai Ho | Best Supporting Actress
रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-


सुरेखा सिक्री
सुरेखा सिक्री एक भारतीय चित्रपट, फिल्म और टेलीविजन अभिनेत्री हैं। अनुग्रही हिंदी चित्रपट अभिनेत्री सुरेखा सिक्री ने अपने फिल्म रूपक की शुरुआत 1978 में राजनीतिक ड्रामा फिल्म क्स्का कुर्सी का से की। और आगे बढ़कर इन्होंने कई हिंदी और मलयालम फिल्मों में सहायक अभिनय किया। साथ में इन्होंने भारतीय टेलीविजन में कई रोल अंकित में भी अहम भूमिका निभाई है।

Surekha Sikri is an Indian theatre, film and television actress. A veteran of Hindi theatre, she made her debut in the 1978 political drama film 'Kissa Kursi Ka' and went on to play supporting roles in numerous Hindi and Malayalam films, as well as in Indian soap operas.

प्रशस्ति – आधुनिक विचारों वाली पर की महिला–प्रमुख के किरदार का समृद्ध चरित्ररचना।
Citation - For a compelling performance as a matriarch with a modern attitude.

Synopsis of the film on page no. 132
पी.वी. रोहिथ

Master P.V. Rohith is a child actor who won a National Film Award for his performance in the 2018 Kannada movie 'Ondalla Eradalla'.

**Citation** - For impishly manoeuvring through a series of events, while staying focused on his character.
समीप रानूउट
समीप रानूउट एक बाल कलाकार है, जिन्होंने अपने आवश्यक की शुरुआत हरजीता से की जिसमें इन्होंने हरजीत सिंह के बचपन का किरदार निभाया है। इनके दूसरे अहम किरदारों में उडा आइरा (2019) के गान का किरदार है।

Sameep Ranaout is a child actor who made his acting debut with ‘Harjeeta’ where he played young Harjeet Singh. His other important roles include as Gagan in ‘Uda Aida’ (2019).

प्रशंसित – हींकी के खिलाड़ी की दिल पूरे देखने वाली जीवनी जो दिखाती है कि वे सह अपनी रुढ़िवादी जड़ों से निकल पाते है।

Citation - A heart touching biopic of a hockey player showing his struggle to rise from his rural roots.
हामिद
सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार
Hamid | Best Child Artist
रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-


तल्हा अरशाद रेशी
तल्हा अरशाद रेशी एक बाल कलाकार हैं, हामिद बत्तिर अभिनेता उनकी पहली फिल्म है।
Talha Arshad Reshi is a child artist. ‘Hamid’ is his debut film as an actor.

प्रशंसित – किरदार की कई भावनाओं को सूक्ष्मता और संतुलन से निम्नाने के लिए।
Citation - For the poise in the character depicting a range of emotions.

Synopsis of the film on page no. 133
श्रीनिवास पोकाले

श्रीनिवास पोकाले एक बाल कलाकार है इतिहास अपने अभिनय की शुरूआत 2018 में मराठी फिल्म नाल से की है।

Shrinivas Pokale is a child actor who made his acting debut with the 2018 Marathi movie ‘Naal’.
Arijit Singh is a singer, music producer, recordist and music programmer. He sings predominantly in Hindi and Bengali, but has also performed in various other Indian languages.

Citation - For unique tonal quality of voice with perfect blend of emotion and technique.
Bindhu Malini Narayanswamy

Bindhu Malini Narayanswamy is a singer trained in Carnatic and Hindustani classical music and also a musician and designer. She holds two graduation degrees—one in BFA (Drawing and Painting) and another in Carnatic Music. A graphic designer from NID, she also worked as the in-house designer for Satyam Multiplex, Chennai and Mapunity, Bangalore.

Citation - For rendering a haunting melody that appears to be the voice of the conscience of the protagonist.
Olu | Best Cinematography

Rajat Kamal | ₹ 50,000/-


M.J. Radhakrishnan

M.J. Radhakrishnan was a veteran cinematographer who worked mainly in Malayalam films. He won the Kerala State Award for Best Cinematography as many as seven times.

Synopsis of the film on page no. 135
Chi Arjun La Sow | Best Screenplay (Original)
Rajat Kamal | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Rahul Ravindran


Citation - The screenplay is modern take on the traditional custom of arranged marriage.

Synopsis of the film on page no. 132
अंधाधुन
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (रूपांतरित)

Andhadhun | Best Screenplay (Adapted)
राजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

श्रीराम राघवन, अरीजित बिस्वास, योगेश चांदेकर, हेमन्थ एम राव, पूजा लोधा सुर्ति

श्रीराम राघवन एक भारतीय फिल्म निर्देशक और पटकथा लेखक हैं। अरीजित बिस्वास मुंबई स्थित एक पटकथा लेखक और निर्देशक हैं। योगेश चांदेकर एक लेखक और पटकथा लेखक हैं। इन्होंने फिल्म अंधाधुन के लिए जाने जाते हैं। हेमन्थ एम राव एक भारतीय निर्देशक और पटकथा लेखक हैं। इन्होंने मुख्यतः पूरा एकल सिनेमा के लिए जाने जाते हैं। योजा लोधा सुर्ति एक पटकथा लेखक और एक्ट्रेस है। इन्होंने एक रसीमा थी (2004), बवलांगु (2016), और अंधाधुन के लिए जाने जाते हैं।

Sriram Raghavan is an Indian film director and screenwriter. Arijit Biswas is a screenwriter & director based in Mumbai. Yogesh Chandekar is an author and screenwriter. Hemanth M. Rao is an Indian film director and screenwriter who works in Kannada cinema. Pooja Ladha Surti is a screenwriter and editor known for ‘Badlapur’ (2015), ‘Ek Hasina Thi’ (2004).

प्रशस्ति – एक मजबूत और विपिनकस्प कहानी जो लोगों को बांधे रखने में सक्षम है।

Citation - Crisp and intriguing story that keeps the audiences on tenterhooks.

Synopsis of the film on page no. 132
तारीख
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (संवाद)
Tareekh | Best Screenplay (Dialogue)
रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Bengali | 116 Mins | Director: Churni Ganguly | Production Company: Opera Studios | Screenplay & Dialogues: Churni Ganguly | Editor: Subhajit Singha | DOP: Goopi Bhagat | Cast: Ritwick Chakraborty, Rudrangshu, Saswata Chatterjee, Anirban, Raima Sen, Ira

चुर्नी गांगुली
चुर्नी गांगुली एक बंगाली फिल्म और टेलीविजन अभिनेत्री और निर्देशक हैं, जिन्हें 'तारिख' (2019), 'निर्भाष' (2014) और 'आरक्षी प्रेमेर गोल्पा' (2010) के लिए जाना जाता है।

Churni Ganguly is a Bengali film and television actress and director. She is an actress and writer, known for films like ‘Tarak’ (2019), ‘Nirbashito’ (2014) and ‘Aarekhi Premer Golpo’ (2010).

श्रवस्ति - गहरे विचारशील संवाद जो निजी रिश्तों की पररस्पर संबंधित होते हैं।
Citation - For deep meaningful conversations that explore interpersonal relationships.

Synopsis of the film on page no. 135
गौरव वर्मा

गौरव वर्मा सांउड विमािन में काम करते हैं। वह बलीर अभिनेता भी प्रस्तुति देते हैं, इनकी फिल्मों में चुंचुंग (2013), गैरि (2014), और तेंडल्या (2018) शामिल हैं।

Gaurav Verma works in the sound department. He also performs as an actor and is known for his work in films like ‘Chewing Gum’ (2013), ‘Yeti’ (2014), and ‘Tendlya’ (2018).

प्रशासित – छोटे शहर का स्वयं-रंग इस अनूठी और कर्मचारी चरित्र के प्रकार में बेहतरीन घंग से उभर कर आया है।

Citation - The flavour and mood of the small town is vastly enhanced by the ambient aural quality.

Synopsis of the film on page no. 136
रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | 138 Mins | Director: Aayita Dhar | Production Company: Unilazer | Editor: Shivkumar Panicker | DOP: Mitesh Mirchandani | Cast: Vicky Kaushal, Paresh Rawal, Yami Gautam

बिश्वदीप दीपक चटर्जी


प्रश्निन्त - तन के विभिन्न वृद्धि के में बनाये गए संगीत के लिए।
Citation - An orchestra of created as well as rendered aural dimensions.
Rangasthalam | Best Audiography

रंगस्थालम सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन

Raajat Kamal | ₹ 50,000/-


Medayil Radhakrishnan Raja Krishnan

Medayil Radhakrishnan Raja Krishnan is an audiographer for Indian films. He has worked in Tamil, Hindi, Telugu, Marathi and Malayalam feature films.

Citation - For playing with beauty and essence of the tonal quality of the silence.
नागेन्द्र के, उज्जैनी

नागेन्द्र के, उज्जैनी कन्नड़ सिनेमा उद्योग में एक फिल्म एडिटर हैं। इन्होंने कई फिल्मों के लिए काम किया जिसमें राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फ़िल्म, 'नानु अवानल्ला अवालु' (2015) शामिल है।

Nagendra K. Ujjani is a film editor in the Kannada cinema industry. He has worked in several films including the National Film Award-winning film, ‘Nanu Avanalla Avalu’ (2015).

प्रशस्ति – किरिकन फ़िल्मों के बीच सहजता और सरलता के साथ किया गया। परिवर्तन का एक बालार्गी प्रस्तुत करता है।

Citation - Crisp and smooth transition between different characters is a hallmark.
Kammarasambhavam | Best Production Design

Rajat Kamal | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-


Vinish Banglan

Vinish Banglan is an art director and production designer. He has won the Kerala State Film award for the film ‘Kammarasambhavam’.

Citation - For preparing relevant terrains and sets of different periods and cultures.
Mahanati
रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-


इंद्रक्षी पट्टनायक, गौरांग शाह, अर्चना राव

इंद्रक्षी पट्टनायक उद्धीशा के एक फ्रीलांस फैशन स्टाइलिस्ट और कॉर्ट्स्ट्रूम डिजाइनर है। गौरांग शाह एक टेक्स्टूरल डिजाइनर है जिन्हें इंडियन हैडलूज में महाराष्ट्री हासिल है। अर्चना राव एक कैशन डिजाइनर और एनआइएफटी की पूर्व छात्रा है। इन्होंने स्कूल के पासस्नातक ऑफ डिजाइन से एएस की डिजाइनर श्रेणी विभाग की है।

Indrakshi Pattanaik is a freelance fashion stylist and costume designer from Odisha. Gaurang Shah is a textile designer who specialises in using Indian handlooms. Archana Rao is a fashion designer and NIFT alumnus. She also pursued an AAS degree from Parsons School of Design, New York.

**प्रशिक्षा** - हेडलूज, फिल्म जगत में रेट-रेट फिल्में के साथ से लेकर आधुनिक समय तक की पोशाकों के विकास और बदलाव के स्थूली परिपार्श्व के लिए।

**Citation** - Evolution of costumes in the Telugu film industry from Black & White era to modern times.

Synopsis of the film on page no. 134
आवे 
सर्वश्रेष्ठ रूपसज्जा कलाकार

Awe | Best Make-up Artist

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-


रंजिथ
रंजिथ जिन्हें गूँ, गिरिधर के नाम से भी जाना जाता है जो कि एक मेक-अप आर्टिस्ट है और पिछले 16 सालों से तेलुगू फिल्मों में काम कर रहे हैं।

Ranjith, also known as U. Giridhar, is a make-up artist who has been working in Telugu cinema for 16 years.

प्रश्नात्मक — हर चेहरे को निर्धार कर उसे हर किरदार के अनुकूल बनाने के लिए।

Citation - For bringing out the texture of each face and giving personality to every character.

Synopsis of the film on page no. 132
रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-


संजय लीला भंसाली
संजय लीला भंसाली एक बॉलीवुड निर्देशक, निर्माता, पटकथा लेखक और संगीतकार हैं। भंसाली कई अवार्ड से नवाजे जा चुके हैं जिसमें पांच राष्ट्रीय पुरस्कार, 11 फिल्मफेयर अवार्ड और एक बॉम्बे गानमंडल शामिल हैं।
Sanjay Leela Bhansali is a Bollywood director, producer, screenwriter, and music director. Bhansali is the recipient of several awards, including five National Film Awards, 11 Filmfare Awards and a BAFTA nomination.

प्रशासित -- फिल्म के हर गीत कहानी में निखार ले जाता है और कथानक को एक नई दिशा देता है।
Citation - All the songs lift the mood of the film and give a different dimension to the narrative.
उरी: द सर्जिकल स्ट्राइक
सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (पार्श्व संगीत)

Hindi | 138 Mins | Director: Aayita Dhar | Production Company: Unilazer | Editor: Shivkumar Panicker | DOP: Mitesh Mirchandani | Cast: Vicky Kaushal, Paresh Rawal, Yami Gautam

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

शाश्वत सच्चादेव
शाश्वत सच्चादेव एक फिल्म संगीत निर्देशक-नायक हैं। इन्होंने मुख्तार पर बॉलीवुड के लिए काम किया है। इनकी कुछ चर्चित फिल्मों में ‘उरी: द सर्जिकल स्ट्राइक’, ‘भीरे दी बेडिंग’ (2018), और ‘किल्ले’ (2017) शामिल हैं।

Shashwat Sachdev is a film music director/singer who has worked predominantly in Bollywood. Some of his popular movies include ‘Uri: The Surgical Strike’, ‘Veere Di Wedding’ (2018) and ‘Phailwan’ (2017).

प्रश्नित – किफ़ा का पार्श्व संगीत फिल्म को बढ़ावती सही वातावरण प्रदान करता है।
Citation - The background score excels in providing the right atmosphere for the film.

120 | FEATURE FILMS

Synopsis of the film on page no. 136
Nathicharami | Best Lyrics

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-


Mansore

Mansore, aka Manjunatha Somasksha Reddy, is a visual artist-turned-filmmaker in Kannada cinema. His debut film ‘Horivu’ (2014) won the National Awards for best regional film in 2015. ‘Nathicharami’ has won five National Film Awards and other accolades.
हेल्लारो
सर्वश्रेष्ठ निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

Hellaro | Special Jury Award

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 2,00,000/-


शाची जोशी, डेनिशा घुम्रा, नीलम पठानिया, तरजानी भाद्ता, बूंदा त्रिवेदी, तेजल पंचासरा, कौशांबी भट्ट, एकता बछवानी, कामिनी पंचाल, जागृति ताकोर, रिंद्रि यादव, प्राणि मेहता, श्रद्धा दंगर तथा हेल्लारो फिल्म की अभिनेत्री है।

Shachi Joshi, Denisha Ghumra, Niilam Paanchal, Tarjani Bhadla, Brinda Trivedi, Tejal Panchasara, Kaushambi Bhatt, Ekta Bachwani, Kamini Panchal, Jagruti Thakore, Riddhi Yadav, Prapti Mehta, Shraddha Dangar are all actresses in ‘Hellaro’.

प्रश्नित — प्रामाण्य महिलाओं के किरदार को बखूबी निभाने के लिए जो एक सामाजिक बदलाव लाने की बात करती हैं, और साथ ही दर्शकों के लिए एक नामग्रित पुरूष पैदा करती हैं।

Citation - For the ability of a group of rural women characters, acting as a unit, to bring about social transformation while taking the audience through an emotional catharsis.

Synopsis of the film on page no. 133
Kedara

Special Jury Award

RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Bengali | 112 Mins | Director: Indraadip Dasgupta | Production Company: Kaleidoscope | Editor: Sujoy Dutta Roy | DOP: Shubhankar bhar | Production Design: Ranajit garai | Cast: Kaushik Ganguly, Rudranil ghosh, Joydeep Kundu, Mousumi Sanyal dasgupta, Indranil Roy

Indraadip Dasgupta

Indraadip Dasgupta is a director and music director/composer in the Bengali film industry. Starting his career as a music director/composer in 2003, he has directed and composed music in over 39 films, and is a multiple award nominee and winner. His filmography included films like ‘Bor Asbe Ekhuni’, ‘Le Chakka’, ‘22 Shrabon’, and ‘Chaplin’. His popular albums include ‘Mon Fakira’ and ‘Parbona Ami Chartey Tokey’.

Citation - For using a range of cinematic techniques and methodology to explore one single main character in a limited space.
आवे सर्वश्रेष्ठ स्पेशल इफैक्ट
Awe | Best Special Effect
रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-


स्रस्थि क्रियेटिव स्टूडियो
स्रस्थि क्रियेटिव स्टूडियो की स्थापना 2013 में किल्लों के लिए विजुअल इफेक्ट्स निर्माण और गैंग को व्यापार में रखकर हुई थी। फिल्म खुद का विस्तार करते हुए ये ए आर (ऑर्गेनिट्रेटेड रिएलिटी), वी आर (वर्चुअल रिएलिटी), प्रोजेक्शन मैपिंग और होलोडाइफिक प्रोजेक्शन जैसे कामों में शामिल हो गए है।

Srushti Creative Studio was founded in 2013, with a focus on Visual Effects for movies and games. It then expanded into offering immersive solutions like AR (augmented reality), VR (virtual reality), Projection Mapping and Holographic Projection.

प्रशंसक – कई कहानियों और फिल्मों के विश्लेषण रूप देने के लिए और आसानी सामग्री को निर्माण तक पेश करने के लिए।

Citation - For the dexterity and finesse in bring to a cohesive conclusion, multiple stories and characters in a visually effective manner.

Synopsis of the film on page no. 132
के.जी.एफ. 
सर्वश्रेष्ठ स्पेशल इफेक्ट
K.G.F | Best Special Effect
रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-


यूनिफाई मीडिया
यूनिफाई मीडिया एक पोस्ट प्रोडक्शन स्टूडियो है जहां डिजिटल कलर प्रेडिंग (डीआरई), वीएफएक्स, डिजिटल सेट एक्सटेंशन, डिजिटल मैट पेंटिंग, हाइएंड एनिमेशन, क्लीन-अप (पीट), मॉशन ट्रैकिंग, फाइनल कंपोजिटिंग और डिजिटल सिनेमा मास्टरिंग (डीसीपी) जैसे विश्लेष डिजिटल सेवा प्रदान करता है।

Unifi Media is the fastest growing post production studio offering a wide range of sophisticated digital services like Digital Colour Grading (DI), VFX, Digital Set Extension, Digital Matte Painting, High-end Animation, Clean-up (Paint), Motion Tracking, Final Compositing and Digital Cinema Mastering (DCP).

प्रशंसित – 80 के दशक के मुश्किल दौर को बढ़ावी और वास्तविक रूप में सरीर बनाने के लिए।
Citation - The film successfully and convincingly creates an era of a rough neighborhood, during the 80s.

Synopsis of the film on page no. 134
कृति महेश मद्या, ज्यादता की तोमर
कृति महेश मद्या ने पद्मावत में स्वतंत्र रूप से गृह निर्माण करने और पहले कई फिल्मों में ऐसी डिजाइन की शाखा के तीर का काम किया। इन्होंने नई दिल्ली के गंगेश महाविद्यालय से भूतात्मक में स्नातक किया है। ज्यादता की तोमर एक प्रशस्त त्योगक, नृत्य निर्देशक और केन्द्रीय विज्ञापन का काम कर रही है और इन्होंने कई टीवी सीरिज में अभिनय भी किया है।

Krutí Mahesh Madya assisted Remo Dsouza for several films before becoming an independent choreographer with ‘Padmaavat’. She did her graduation in Bharat Natyam from Gandharva Mahavidyalaya, New Delhi. Jyothi D Tommaar is a trained Kathak dancer and found her forte in dancing at a tender age of four. She has been a regular compere on Mumbai Doordarshan since 1985 and now acts in TV serials.

प्रशस्ति – कई नएकुण पल का संयोजन एक तुम्हारे अंदाज में पेश किया गया है।

Citation - Exquisite delicate moments synchronised beautifully creating a visual treat.

Synopsis of the film on page no. 135
K.G.F. | Best Action Direction

RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-


Vikram Mor, Anbariv

Vikram Mor is a stunt artist who has worked as a lead stunt master in 90 Kannada films and as an assistant stunt master for 68 movies. A member of All Karnataka Cine Stunt Artists and Stunt Masters Association, he has so far been involved in about 550 Kannada movies.

Anbariv are action choreographers and stunt coordinators who work in Tamil, Telugu, Malayalam and Hindi film industries. The duo has worked is over 75 movies.
नाथिचरामी विशेष उल्लेख
Nathicharami | Special Mention
प्रशस्तिपत्र | CERTIFICATE


Sruthi Hariharan

प्रशस्ति — आधुनिक समय के एक नववुल्लत की उल्लेखनीय और बाहरी व्यक्तिगतता के जीवन में इनका अभाव काम करता है।
Citation — For the complex and nuanced portrayal of a new age Indian woman.

Synopsis of the film on page no. 134
Kadak


Chandrachoor Rai is an Hindi film and TV series actor known for acting movies like 'Aankhon Dekhi' (2013), 'Dum Laga Ke Haisha' (2015) and 'Meeruthiya Gangsters' (2015). He is a graduate from Film and Television Institute of India (FTII), Pune. His recent films include 'Kadakh' and 'Upstarts' (2019).
Joseph

Joseph | Special Mention

Prashasti Patra | CERTIFICATE


Joju George

Joju George is a film actor and producer who works in Malayalam films. He began his acting career as a junior artist in the Malayalam film 'Mazhavilkoodaram' (1995) and later began appearing in supporting roles. He went on to win the 2018 Kerala State Film Award for Best Character Actor for his performances in 'Chola' and 'Joseph'. He also co-produced the 2015 film 'Charlie'.

Prashasti – A successful actor who has consistently delivered memorable performances through his roles in various films.

Citation - For convincing portrayal of a vigilante, who busts “Human organ” racket.

Synopsis of the film on page no. 133
Sudani From Nigeria | Special Mention

**Praashasti Patra | CERTIFICATE**

**Malayalam | 124 Mins | Director:** Zakariya Mohammed | **Production Company:** Happy Hours Entertainments | **Screenplay:** Zakariya Mohammed, Muhsin Parari | **Editor:** Naufal Abdullah | **DOP:** Shyju Khalid | **Cast:** Soubin Shahir, Samuel Abiola Robinson

---

**Savithri Sreedharan**

Savithri Sreedharan is an Indian theatre and film actress. She has been a part of several Calicut-based theatre groups for over forty years and made her film debut in 2018 in the film ‘Sudani from Nigeria’. Her other major films are ‘Virus’ (2019) and ‘Dakini’ (2018).

---

Citation - With a backdrop of sports, the film explores the complexity of emotions in a mother-son’s relationships.
अंधापुन (Andhadhun)

आकाश एक नेपाली युवक है जो लंदन में युगीन अंग्रेजी की शैक्षिक की कार्य कर रहा है। एक दिन, उसे एक नया संस्थान के लिए तैयारी करनी होती है। उसके परिवार के लिए उसे इंग्लैंड की यात्रा की जाती है। उसने अपने परिवार के साथ यात्रा करना चाही था। उसने इंग्लैंड की यात्रा के बाद, उसने इंग्लैंड के लिए धूमधाम की यात्रा की। उसके परिवार के लिए उसे इंग्लैंड की यात्रा की जाती है। उसके परिवार के लिए उसे इंग्लैंड की यात्रा की जाती है।

Akash, a blind piano player, is preparing for a London music concert. After an accidental encounter, Sophie and Akash become friends. Recognising his talent as a pianist, Sophie takes him to her father's restaurant where he lands up a job. At the restaurant, Akash meets a yesteryears' actor Pramod Sinha who asks him to do a private piano session for his wife Simi, as a surprise present to her. At Sinha's house, Akash, who may be pretending to be visually-impaired, unwittingly becomes entangled in a number of problems as the murder of the former film actor takes place as he plays the piano.

ओ (Awe)

सहा अपने दोस्तों कुणानन्दी के माता-पिता का अर्हताजना करने पर दर्शन ले रही है। लेकिन उन्होंने उसे नहीं दिया। दर्शन लेने के वक्त वे सहा के घर आ जाते हैं। एक शख्स की दिशा में वह सहा के घर आता है। उसके साथ उसे एक अच्छी दिन है। उसके साथ उसे एक अच्छी दिन है। उसके साथ उसे एक अच्छी दिन है।

Radha impresses parents listing qualities of her lover, Krishnaveni. But they disapprove the minute she walks in. Nala arrives for a job interview of a chef not knowing how to cook. A fish becomes his saving grace. Eight-year-old Maksha is overpowered by an egotistic magician-yogi. But upcoming events squash his ego. Shiva, a man interested in science, is confronted with his apparent future. Mira, a drug-addict waitress, conspires to loot her workplace with her boyfriend. But an accident leaves her with a haunting experience.

Meanwhile, a troubled Kafi, in her mid-20s, tries to commit suicide. How these stories blend in and form a bigger story forms the crux of 'Awe'.

बघाई हो (Bodhai Ho)

25 वार्षिक उम्र से उत्पन्न की दुखी एक लड़की की लापता के बारे में लगता है। उसे एक अद्भुत दुखी लड़की का साथ लेना है। उसे एक लड़की का साथ लेना है। उसे एक लड़की का साथ लेना है।

The news of 25-year-old Nakul Kaushik's middle-aged mother's pregnancy comes as a shock to the entire Kaushik household. Everyone's gaze is now turned towards the family which has to deal with the social embarrassment. What follows is a phase of resentment and emotional confusion for Nakul as he goes through ups-and-downs in his relationships — with father, mother, feisty grandmother, teenaged brother Gullar, fiancée-colleague Renee — and friends, relatives, and neighbours. Torn between public embarrassment and love for his family, especially his mother, he tries to come to terms with the idea of his parents’ active sex life and the idea of family itself.

चिर अर्जुन ला सो (Chi Arjun La Sow)

वह तो अर्जुन का हास्य कार्य करने का कोई इरादा नहीं है। वह उसके माता-पिता उसकी एक लड़की के घर एक दुखी लड़की के आसपास लाते होते हैं। उसके साथ उसकी एक लड़की के आसपास लाते होते हैं। उसके साथ उसकी एक लड़की के आसपास लाते होते हैं।

Even though Arjun has no intention of getting date for him at his place. Arjun falls for the girl he's about to meet, but soon, circumstances make him change his mind regarding marriage.

चुंबक (Chumbok)

बालु एक 15 साल का बालू जो बालू के आवास गांव में बजी देखने का खुशी देखता है। बालू जो बालू के आवास गांव में बजी देखने का खुशी देखता है। बालू जो बालू के आवास गांव में बजी देखने का खुशी देखता है।

Baalu, a 15-year-old writer, dreams of escaping this wretched life in city and starting a small business of a sugarcane juice stall near his village’s bus-stand. A desperate and broke Baalu, along with friend Dhananjaya aka Disco, plans to earn some quick buck through the infamous ‘Nigerian SMS Scam’. But, of the hundreds they expected to respond to his text messages, just one man falls for it — a simple,
poor, mentally-slow villager called Prasanna. Caught between his guilt of fleecing such a man and the greed to fulfil his little ambitions, Baoul will now have to make a choice.

Hamid (Hamid)

786 Nandri is a sleek 8-year-old Hamid Hamedy who is a breezy, stylish 8 year old boy with a penchant for adventure and excitement. He dreams of becoming a pilot when he grows up.

The number 786 always bewildered eight-year-old Hamid. One day a teacher tells him that this is God's number. Trying different combinations on his missing father's old mobile phone, he gets connected to a person he believes is God. On the other side is Abhay, an CRPF jawan who is disinterested initially but ends up entertaining Hamid. These two, unknowingly and unintentionally, change each other's world for the better.

Harjeeta (Harjeeta)

Harjeeta, a 24-year-old girl from a small town in India's Punjab, is a promising athlete who dreams of representing her country at the Olympics. Her life is turned upside down when she is forced to marry a man she barely knows.

"Harjeeta" is based on the remarkable true story of an underdog who fights against all odds to come out as a winner. Harjeet Singh, son of a truck driver, overcame acute poverty to become a professional Indian hockey player. He went on to captain the Indian squad at the 2016 Men's Hockey Junior World Cup where India eventually won a Gold medal after 15 years.

Heldara (Heldara)

1975 ends on a note of hope and promise as the year ends on a bright note. The year is marked by the victory of the Indian cricket team in the World Cup final against Australia. The country celebrates the victory with enthusiasm.

Circa 1975. Young Manjiri is married off in a small village in the Rann of Kutch. There, she joins a group of women shackled by patriarchal mandates. Their only escape to the suppression is when they go out to fetch water every morning to a distant waterbody. One day, while on their war to fetch water, they find someone is in the middle of the desert and their lives are changed forever.

Joseph (Joseph)

Joseph, an only child of his parents, has been known for his investigative prowess, unexpectedly gets pulled into a criminal case.

Kadakh (Kadakh)

Suniti's life is turned upside down when her husband sunil, a man who has been having an affair with Sunil's wife Chhaya, is murdered. Sunil is shocked but not without reason. He wants to know all the details of Sunil's affair with Chhaya, even the awkward, uncomfortable ones. And then he produces a gun from his bag and shoots himself in the head. In a few minutes his wife Mali comes back home. Sunil tells her this was a man he had fired from his office last week. Together they manage to hide the body. Later, the Diwali party at their place turns into a night of revelations as dark secrets keep tumbling out.
कथासार | Synopsis

कम्मार संभावनम [Kammara Sambhavam]

फिल्म कम्मार संभावनम द्वितीय गिरी कूड़ में है जो एक तख्तीदेवी और बोझिल जिंदगी पर बनाई है जहाँ दो उभय का दिशा करता है जो उसकी मदद करते है। लेकिन उसके दिनों तब बदल जाता है जब दो नेताओं से पुनर्वार बंध बंधा से निकला है और वर्तमान स्वतंत्रता संगठन में शामिल हो जाता है।

The film revolves around Kammaran Nambari who lives an aimless and immoral life as he betrays those who have helped him. But his life changes for the better when he meets Netaji Subhash Chandra Bose and joins the Indian freedom struggle.

केरदार [Kedor]

नरसिंह तब से ताज की आवाज निकलने का हुआ सकता है। इस कला की तक्तियाँ खुद के बने हुए नरसिंह, कंबड़ बनें वाले कंबड़ों के साथ रहता है। नरसिंह की जिंदगी में अफ़रीद की तस्वीरों और आवाजों का ही सहारा है जब एक दिन जो उसे उसके अचानक दोस्तों में देता है जिसमें दो खूबसूरत फिल्मों में आया और उसका पति संभावित किए। इस नरसिंह में एक आत्मोत्कारण जायजा और हिम्मत दौ। लेकिन इस दुर्भाग्य ने उसकी मददगारी पर असर छोड़ा जिसकी वजह से कई गुरुरोधों और दुःखाल पता आ गई।

Narasingha is a ventriloquist. When the relevance of his art started to fade away, so did his livelihood. Resigned to life under the shade of his memories, he breaks bread with a junk-dealer, Keshto. Narasingha’s loneliness becomes a pointed picture, replete with images and voices borrowed from the past. The story takes a turn when Keshto presents him with an armchair, something he had always coveted to possess. The wooden armchair brings about a transformation in his personality. It restores his confidence and adds bravado to his essence. But this transformation comes at the cost of his sanity, leading to a series of misfortunes and unexpected turns.

के.जी.एफ. (KGF)

इस फिल्म की रचना 1951 में होती है जब कर्नाटक के कोलर जिले में सोने की कोटी होती है। उसी दिन एक बच्चा बेगूसराय में जन्म लेता है। बच्चे का नाम रचना जाता है जब तक कि कुच्चे के बच्चे जो बड़ा होकर बन जाता है। कोलर की अंग्रेजी में 'रेडियो' या रेडी होता है। इसी जीवन में वह एक दिन वहाँ पहुँचता है जहाँ किसी हिम्मती की अनुशासन पर वह दोस्तों को निर्देशित करता है। वह कहता है कि उसकी बच्चों के लिए एक सामरिक नियम राखा जाए।

The story begins in 1951 when gold is discovered in the Kolar district in Karnataka. The same day a boy named Raja Krishnappa Bairy ‘Rocky’ is born who grows up in poverty. He arrives in Bombay (now Mumbai) in the 1960s to seek power and wealth as desired by his dying mother. He fulfills his promise made to his master as he gets successfully involved with the gold mafia there. Later, he is recruited to kill Corado, the oppressive heir-in-waiting, in Kolar Gold Fields (K.G.F.). He finds not only wealth and power but also something more meaningful, respect. Will he be able to become a Don? Will he set his people free from the age-old slavery?

महानाटी (Mahanati)

महानाटी, दिए गए महानाटी अभिनेत्री शालिका की उपासक बदन करती है जिन्होंने 60 और 80 के दशक में फिल्म उद्योग में तृप्ति प्राप्त की थी। फिल्म की वास्तव में उनकी जीवनी की कई दृश्यों के लिए निर्देशक बनने वाले नफरत है। दिए गए महानाटी उनकी जीवनी को शानदार तरह से दर्शाया है जिसे उनकी जीवनी की उपलब्धता के लिए प्रशंसन किया जाता है।

Mahanati chronicles the life of legendary southern actor Savitri who took the film industry by storm in the late 50s and 60s. The film goes through various tragic incidents in her personal life and how she stood up against all odds and chose her role in life.

नाल (Naal)

महासत्र से दो दिनों से नाल के विरुद्ध गांधी नाल का एक अंदाजा पत्रकार बदन करता है। वो अपनी जीवन में लिखने का खूब दास बनकर बदन करता है।

Naal is about Chaitanya’s emotional world and follows him on an unexpected journey of experiencing motherly love.

नाथिकिरिणी (Nathichirimai)

ये फिल्म एक ऐसी नातिका की जिंदगी पर आधारित है जिसमें धर्माकार और डाकार दो पुष्प शारीरिक जल्दी से जुड़ी सामाजिक वर्तमानों में करता हुआ है। गौरी एक आम्लविक, पहली तलाश, अलविदा बनती है जिसे अंत में धर्माकार के लिए माफ़ी मांगता है। उसके लिए अंत में उन्हें सुधार की उपलब्धता है और उन्हें घर में लौटने की जिम्मेदारी है।

This film is woven around the female protagonist whose personal life and her overall being is stuck within the social taboos related to carnal desires. Gouri is a modern, well-educated, independent widow, working in the IT sector, while Suresh leads an unhappy married life who is on a quest to find the love of his life. What happens when Gouri and Suresh meet; and how do they come to terms with each other mark the essence of ‘Nathichirimai’.
आोलु [OLU]

बीलू एक खानाबोद्ध लड़की की कहानी है जो रहस्यमयी तरीकों से केंद्र के बैकॉन्टर में बनी रह जाती है जहां उसके बल्लराकरियों ने उससे कुछ दिया था। केंद्र दुर्गिना (शीला डेवी) की शर्मा के दौरान, वो रानी के उल्लंघन के उद्देश्य से हैली (जूडे मीरा और वर्जीला) की शर्मा ने उससे युक्ति की। एक सन्दर्भ के रूप में, यह कहानी पूरी करने में मदद करती है।

'OLU' [She] is the tale of a Gypsy girl who mysteriously survives under the Kerala backwaters where she has been sunk by her rapists. Usually during full-moon nights, she can see the world above water. It is on such a night that she happens to 'meet' Vasu, a young untalented painter, rowing his boat. Out of love, she empowers him to create paintings that will change his life. But their contrasting inner visions of love may remain unbridgeable.

आोडल्ला एसालाल्ला (Ondalla Eradalla)

सात साल की सहित काल का पालतू, जानवर बाहु दुर्गिनाकर को जाता है। बाहु को दूंबोने के दौरान समीर एक शहर में पुर्युंच मिला है जो वहां रहना पसंद करता है। उसकी मुलाकात समीर के निरंतर सशक्त कार्यों के लिए रखी गई है, तथा इसमें दोस्तों के बीच सागर समीर का राहत पड़ने से लगता है। फिर ने उस तथ्य पर जोर देने की कोशिश की है कि एक दूसरे को मजबूर करने ही विधिमयों में खुली हासिल करने का एकमात्र माध्यम रहा है।

Seven-year-old boy Sameera accidentally loses his beloved pet Banu. While searching for Banu, Sameera reaches a town called 'Pete' and is all alone. He meets many people from different sections of the society. Will innocent Sameera get reunited with his pet among the selfish people? The film tries to emphasize on the fact that helping each other is mantra to be happy and content in life.

पद्मावत (Padmavat)

विशाखा की रचना हैरामने के बेहद खुशुरूएँ है। यह उसकी शैल की कहानी दिस्तों के सुंदरता अन्तस्तवेंगों विद्वानों के कारण एक खुशुरूएँ है। उस वह कहीं भी कोई रूप पर उसे राजा बनता है, जो गर्भ ने लेने के भाव तिरंगे पर एक धरा बनता है। दिवाली और दिवाली के राजा महारानी दिविन बाबु में बसी बुरी तरह छिपी जाती है। अलाय के राजा में वसंत की जल से जीवन का जल कहती है। दिवाली की धातुकी के दौरान राजा को शोध कर आदर करने का धार्मिक सत्कार करता है, लेकिन सब व्यापार हो जाता है।

Queen Padmavati of Chittor is blessed with exceptional beauty. When the tales of her matchless beauty reaches Delhi’s Sultan Alauddin Khilji, he wants to possess her at any cost. He attacks Chittor with brutal force. A bloody battle ensues between Khilji and Chittor’s King Maharawal Ratan Singh who dies defending his kingdom and his queen. Khilji then manages to breach the fortress, but in vain as the Queen commits 'jauhar' to protect her dignity and honor of her kingdom.

रंगस्थलम (Rangsthalam)

एक गुप्ता जो मुन नहीं सकता है और उसका छोटा बाप नीलकंठ रंगस्थलम गांव के मुखिया के 30 साल से चल रहे हमनकारी नियामों के खाले का फैसला लेते हैं।

A young man with hearing impairment and his elder brother decide to end the 30 years of tyrannical rule of Phanindra, the president of Rangsthalam village.

सुदोनी नामक महाशिवरात्रि (Sudoni From Nigeria)

महिजन कैलेरा में फंसी में रहने वाला एक फुटबॉल खिलाड़ी है। उसकी नामकरण से लेकर विदेशी फुटबॉलिस्टों के नामकरण एंडर्स के तीन देश पर क्रम करना है।

एक नामकरण के लिए नामकरण से लेकर विदेशी फुटबॉलिस्टों के नामकरण एंडर्स के तीन देश पर क्रम करना है।

Majid, a typical football lover from Malappuram in Kerala, works as a recruitment agent for foreign players for local tournaments. When Samuel, a Nigerian footballer hired by him, suffers a severe back injury and is advised two months’ bed rest, Majid is obliged to take him home. Ecstatic to host a foreign footballer and common love for football, Majid’s relatives and neighbours shower their love on Samuel. But soon the beautiful story of friendship is disrupted by the state officials in the name of law.

तारीख (Taarekh)

कथाका दो बेटों के बीच संघर्ष के उद्देश्य में फुटबॉल खेल में उसके रूपों के मध्य से जोड़ा गया है। एक अवसरपूर्वक में एक गोल का क्रियान्वयन ने अपने जीवन को उत्साहित कर दिया है। जब एक नया लोकल फुटबॉल नेविगेट उसके काम में रूपलट लेता है। अलोकुण्जी के बुद्धिमत्ता का विरोध होता है।

The plot revolves around the conflict between two sons whose lives are poles apart after their father demised in a sudden accident. A passionate make-up artist has his life turned upside down when a psychopathic "serial lawyer" takes an interest in his work - and has his moral compass put to test.
The film is about 23-year-old driver Gajya, who decides to buy a colour TV set of his own to watch cricketing legend Sachin Tendulkar’s Game. At the same time a 13-year-old schoolboy, Tendlya, wants to play cricket like Tendulkar. ‘Tendlya’ is set in the 1990s when Indian society was going through marked transition and a television (TV) set was still a major aspiration for people.

उर्दू: د سریکال سترائیک [Uri: The Surgical Strike]

پاکستان میں پانچویں بانی فلم، 2016 میں پاکستانی افیکٹر کوئی رہا اور دوسرے سیکرٹری پر فیلڈ میں برابر خواتین سے لبرکا کی زبان اور اسنویک رویے نے ایک ایک گروپ کا بھی بہت رنگ بھی بھر کر، ان کی شکست کی رہائی کا کام کرتے ہوئے اسی سال کے

Divided over five chapters, the film depicts the surgical strike conducted by the Indian military against suspected militants in Pakistan-occupied Kashmir in 2016. The film features 11 tumultuous events over which the strike was carried out by the Indian Army’s Special Forces to avenge the killing of fellow army men by a terrorist group in Uri the same year.
Films made in any Indian language, shot on 35 mm or in a wider gauge or digital format but released on either film format or Video/Digital format and certified by the Central Board of Film Certification as a Documentary/Newsreel/Non-Fiction/Short Fiction are eligible for non-feature film section.
AAI SHAPPATH (Marathi)
Best Direction
आई शापथ (मराठी)
सर्वश्रेष्ठ निर्देशन

AMOLI (Konkani)
Best Investigative Film
अमोली (कोंकणी)
सर्वश्रेष्ठ खोजी फिल्म

BUNKAR: THE LAST OF THE VARANASI
WEAVERS (English, Hindi)
Best Arts & Cultural Film
बुनकर: द लास्ट ऑफ़ द वाराणसी
वीवर
सर्वश्रेष्ठ कला एवं सांस्कृतिक फिल्म

CHALO JEETE HAIN (Hindi)
Best Film On Family Values
चलो जीते हैं (हिंदी)
परिवारिक मूल्यों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म

CHILDREN OF THE SOIL (Hindi)
Best Audiography
किल्लून ऑफ़ द सोइल (हिंदी)
सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन

EKAANT (Hindi)
Special Jury Award
एकांत (हिंदी)
निर्णयिक मंडल का विशेष पुरस्कार

FELUDA: 50 YEARS OF RAY’S DETECTIVE (English)
Best Debut Non Feature Film of A Director
फेलुड़ा: 50 ईयर्स ऑफ़ रे डिटेक्टिव (अंग्रेजी)
निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ प्रथम गैर-फीचर फिल्म

G D NAIDU: THE EDISON OF INDIA (English)
Best Science & Technology Film
जी डी नाईडु: द एडिसन ऑफ़ इंडिया (अंग्रेजी)
सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक एवं तकनीकी फिल्म

GLOW WORM IN A JUNGLE (Marathi)
Special Mention
ग्लाउ वार्म इन ए जंगल (मराठी)
विशेष उल्लेख

JYOTI (Marathi)
Best Music Direction
ज्योती (मराठी)
सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन

KHARVAS (Marathi)
Best Short Fiction Film
खरवस (मराठी)
सर्वश्रेष्ठ लघु कल्पित फिल्म
LADDOO (Hindi)
Special Mention
लडू (हिंदी)
विशेष उल्लेख

MADHUBANI – THE STATION OF COLOURS (Hindi)
Best Narration Voice-over
मधुबनी—द स्टेशन ऑफ कलर्स (हिंदी)
सर्वश्रेष्ठ प्रवाचन / वायस ऑवर

MAHAAN HUTATMA (Kannada)
Special Mention
महान हुताम (कन्नड)
विशेष उल्लेख

REDISCOVERING JAJAM (Hindi)
Best Promotional Film
शीघ्रतापूर्वक जाजम (हिंदी)
सर्वश्रेष्ठ प्रोमोशनल डेन्वेलप्ली फिल्म

SARALA VIRALA (Kannada)
Best Educational Film
सरला विराला (कन्नड)
सर्वश्रेष्ठ शैक्षिक फिल्म

THE SECRET LIFE OF FROGS (English)
Best Non Feature Film
Best On-Location Sound Recordist
Best Cinematography
द सीक्रेट लाइफ ऑफ फ्रोग्स (अंग्रेजी)
सर्वश्रेष्ठ नॉन-फीचर फिल्म
सर्वश्रेष्ठ ऑन-लोकेशन साउंड रिकॉर्डिंग
सर्वश्रेष्ठ फिल्म निर्मातार

SON RISE (English, Hindi)
Best Non Feature Film
Best Editing
सन राइज (अंग्रेजी, हिंदी)
सर्वश्रेष्ठ नॉन-फीचर फिल्म
सर्वश्रेष्ठ संपादन

SWIMMING THROUGH THE DARKNESS (Bengali)
Best Film On Sports
রিমিনিং দ্য ডার্কনেস্স (বাংলা)
খেলার প্রশিক্ষণের জন্য সর্বশ্রেষ্ঠ ফিল্ম

TAALA TE KUNJEE (English, Hindi)
Best Film On Social Issues
ताला ते कुंजी (अंग्रेजी, हिंदी)
सामाजिक मुद्दाओ पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म

WHY ME? (English, Hindi)
Special Jury Award
वाय मी? (अंग्रेजी, हिंदी)
स्पेशल जर्या अवॉर्ड

TIGER (English)
Best Environment Film
द टाइगर (इंग्लिश)
सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण फिल्म
सन राइज़
सर्वश्रेष्ठ गैर फीचर फिल्म
Son Rise | Best Non-Feature Film
रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,50,000/-

Hindi | 120 Mins | Director: Vibha Bakshi | Production Company: V2 Film and Design Pvt. Ltd. | Editor: Hemanti Sarkar | DOP: Attar Singh Saini
Synopsis - The infamous skewed girl-boy sex-ratio in Haryana may have resulted in an unprecedented rise in crimes against women. However, all may not be lost, as this film follows ‘ordinary’ men doing the ‘extraordinary’ work in their struggle for women’s rights and gender justice. From a forward-thinking village chief and father of two daughters, fighting for women to enter the male-dominated arena of local-politics, to a farmer who, in an arranged marriage, defies society by marrying a gang rape survivor. Can these glimmers be the rays of hope we have been looking for?

Vibha Bakshi is a filmmaker, journalist and an alumnus of Boston University. She earlier directed ‘Daughters of Mother India’ (2015), which won the National Film Award for Best Film on Social Issues.

V2 Film and Design is an award-winning film production company founded by filmmaker and former CNBC journalist Vibha Bakshi.
The Secret Life of Frogs | Best Non-Feature Film

Rajat Kamal | RAJAT KAMAL ₹ 1,50,000/-

English | 54 Mins | Directors: Ajay Bedi, Vijay Bedi | Production Company: Bedi Universal | Cast: Jeff Alan Greenway
कथासार - ‘दि सीक्रेट लाइफ ऑफ़ फ्रॉग्स’ भारत के उच्चधर्म रचनाओं पर बनी पहली फिल्म है। यह फिल्म कमांडर हो रहे पत्रिकायों घाट पर व्यापक रूप से पूरा की गई, जो हजारों दुलेख समन्वित थी। वे बाहरी मंडलों की अनुभूति प्रतिष्ठा को दिखाती है और जानवरों के संरचनात्मक विकास को पूरा करने की कगार पर है और जिसे सुरक्षित संरचना के दरकार है। यह दो प्रजातियों है जिसके बारे में कोई भी समस्या विश्वास अथवा जानता है और ऐसा माना जाता है कि ये आयनासर से बढ़ते हैं। अगर जानवरों के संरचने के लिए कोई भी प्रयास किया जा सकता है तो यह होना चाहिए, यह पारिस्थितिकी तत्त्व के आदर्श दृष्टि जो पत्रिकायों घाट को बना रखते हैं।

**Synopsis** - 'The Secret Life of Frogs' is the first-ever film on Amphibians of India. The film, shot extensively in the fragile Western Ghats, showcases unique species of frogs like the purple frogs which are critically endangered and require immediate protection. It’s a species that every amphibian expert is aware of and is believed to have co-existed with dinosaurs. If any effort at all is to be put into conservation it has to go towards the Purple frog, which can be the ideal ambassador for the ecosystem that makes up the Western Ghats, which is home to thousands of rare flora and fauna.

---

**विवरण**

**अजय बेडी और विजय बेडी** (Ajay Bedi & Vijay Bedi)

अजय बेडी और विजय बेडी प्राचीन जीवन फिल्मकारों की शीर्ष सदस्य नहीं हैं। वे सबसे पुराना एथलीट देश हैं जिन्होंने अपनी फिल्म ‘दि पोलिंग लांग्वर’ और ‘रोहेन ऑफ़ दि मिस्ट’ के लिए वाइडस्क्रीन अवार्ड्स जीत हैं।

**Ajay Bedi & Vijay Bedi** are the third generation of wildlife filmmakers. They are the youngest Asians to have won the Wildscreen Awards (Green Oscar) for their films: ‘The Policing Langur’ and ‘Cherub of the Mist’.

**प्रबंधन**

**बेडी यूनिवर्सल** (Bedi Universal)

बेडी यूनिवर्सल ने नयी नागी फिल्मकारों और पूर्विक अंतर्राष्ट्रीय चैनलों को आर्थिक आर्थिक विभाजन के लिए फिल्म प्रोडक्शन की सेवा दे चुका है।

**Bedi Universal** has provided film production services to leading filmmakers and well-known international channels on a wide spectrum of subjects.

---

**श्रेयस** - कहानी कहता है... एक अनजानी भाषा से संबंध। कुछ से मंडल के जीवन को देख दिखाता। पद्धति, दृष्टि का अदभुत चमकार।

**Citation** - For telling the tale, with profundity and beauty, of one of the world’s most unique and hitherto neglected amphibians.
FELUDA: 50 Years of Ray's Detective | Best Debut Film of a Director
रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,50,000/-

Synopsis - In 2017, ‘Feluda’ turned 50. Created by the maestro Satyajit Ray, this iconic fictional private detective is renowned for his remarkable observation, analytical, and introspective qualities, alongside physical attributes bordering on the fantastic. As the first Indian biopic on a fictional character, this documentary showcases and analyses the 50-year journey through fascinating interviews and illustrations, rare film and audio clips, radio plays, audio books, comic strips. It explores how he attained ‘cult’ status, and eventually became part of the ‘socio-cultural’ existence, with admirers worldwide. It also throws light on the designer and literary genius side of one of the world’s greatest filmmakers, Satyajit Ray.

सारिक चटर्जी (Sagnik Chatterjee)

Sagnik Chatterjee is a writer, director and producer from Kolkata, West Bengal and is known for producing national and international documentaries. He won a National Film Award for Best Debut Non-Feature Film of a Director for his first short film ‘Feluda: 50 Years of Ray’s Detective’ (2019).

Citation - For springing to life and celebrating Satyajit Ray’s most popular fictional character, with depth and aesthetic, across varied media.
बुनकर — द लॉस्ट ओफ द वाराणसी वीवर्स
सर्वश्रेष्ठ कला | सांस्कृतिक फिल्म

Bunkar: The Last of the Varanasi Weavers | Best Arts/Cultural Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

English | 67 Mins | Director: Satyaprakash Upadhyay | Production Company: Narrative Pictures & Sapana Sharma | Screenplay: Sarah Lucy Beach | DOP: Vijay Mishra | Editor: Arunabha Mukherjee
Synopsis - This film captures the lives of Varanasi weavers and the price they pay to keep Indian legacy alive. These weavers can weave with precision almost anything that the human mind can imagine. However, with cheap power loom fabrics rapidly making their way into our wardrobes, they stand at a crossroads. The film compels us to rethink the role we can play in making a difference to their lives. Else, we may lose this art forever.

Parichay

सत्यप्रकाश उपाध्याय (Satyaprapaksh Upadhyay)

सत्यप्रकाश उपाध्याय एक निर्माता और निर्देशक हैं और वे रियल ‘पिक्चर्स’ के सहसंस्थापक हैं। इनकी सत्यप्रकाश उपाध्याय की फिल्म ‘रूम’ जीवन में एक महत्वपूर्ण खेल है और वे भारतीय साहित्य फिल्म समारोह 2018 में निर्माता के लिए विशेष ज्वूरी समान मिला।

सत्यप्रकाश उपाध्याय is a producer and director and the co-founder of Narrative Pictures. His short film ‘Neer’ as a producer won special jury mention in the 8th Dada Saheb Phalke Film Festival 2018. ‘Bunkar’ is his directorial debut. The film was selected for various film festivals including the Indian Panorama, IFFI2018.

Profile

नैरेटिव पिक्चर्स (Narrative Pictures)

नैरेटिव पिक्चर्स एक फिल्म निर्माण कंपनी है जिसके संस्थापक निर्देशक सत्यप्रकाश उपाध्याय और सपना शर्मा हैं जो पुंजी की एक फिल्म निर्माताओं हैं。

Narrative Pictures is a film production company co-founded by director Satyaprapaksh Upadhyay and Sapana Sharma, a film producer from Mumbai.

Citation - For its rich, textured tapestry of the history, life, craft and art of the traditional Varanasi weaver, and their cultured dignity in the face of numerous challenges.
जी. डी. नायडू – द एडिसन ऑफ इंडिया
सर्वश्रेष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी फिल्म

G.D Naidu: The Edison of India | Best Science & Technology Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

English | 53 Mins | Director: Ranjith Kumar | Production Company: Films Division | Editor: Shanmuganathan | DOP: Rajendran
**Synopsis** - The film is a biopic tracing the life and times of the great inventor of India, GD Naidu (1893-1974), popularly known as the Edison of India. The documentary traces, with the help of well preserved footage from the personal collection of the inventor himself, the life and times of the versatile genius who despite poverty and poor education, went on to become an entrepreneur and inventor of many machines, tools and devices. Naidu survived the bombing of Stuttgart in World War II and was given shelter by a family of entrepreneurs in the region. The resulting friendship continues even today between the grandchildren of both families. The film is enriched by various scientists, industrialists and eminent persons speaking about Naidu’s unique endeavours and inventions.

**Parichay**

**K. Ranjith Kumar**

K. Ranjith Kumar did a diploma in Film Processing and TV Production (DFTech) at the MGR Film & TV Institute of Tamil Nadu in 2007. He started as assistant cameraman in the Tamil film industry in 2007. He worked as a film scanning and recording technician for various companies in Chennai and for more than 350 Indian languages feature films from 2009 to 2013. Currently, he is working as a laboratory assistant in Films Division, Mumbai.

**Profile**

**Films Division of India (FDI)** commonly referred as Films Division was established in 1948 soon after independence of India. It was the first state film production and distribution unit.

**Citation** - For its portrayal of GD Naidu’s incisive mind and extraordinary life, spotlighting the inspirational range of his scientific inventions.
रीडिस्कवरिंग जाजम सर्वश्रेष्ठ प्रोत्साहन देने वाली फ़िल्म
Rediscovering Jajam | Best Promotional Film
रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Synopsis - As public spaces are getting lost in the face of rapid urbanisation, Indian craftsmen share their stories of Jajam, a large traditional textile that was a gathering space for people in the villages of Rajasthan. ‘Rediscovering Jajam’ is about how Jajam’s presence has featured in peoples’ lives, their experiences of it, beliefs and so on.

PROFILE

Rachel Bracken Singh is a film producer based in Rajasthan, India, and is known for producing the documentary, ‘Rediscovering Jajam’.

Avinash Maurya is from the capital city of Delhi. He is a documentary filmmaker and has no formal training in filmmaking.

Kriti Gupta is from the state of Rajasthan in India. She is a documentary filmmaker with post-graduate degree in Fine Arts.

Parichay

Avinash Maurya, Kriti Gupta (Avinash Maurya & Kriti Gupta)
The World's Most Famous Tiger | Best Environment Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

English | 44 Mins | Director: Subbiah Nallamuthu | Production Company: Natural History Unit India | Editor: Ralph Quattrucci | DOP: Subbiah Nallamuthu | Narrator: Ace Bhatti
कथासार - मछली – परिचय भारत के राणामूर्ति नेहरू नामांकन पार्क की व्यावसायिक जीवन जीते जो अपने जज्बे, बहादुरी और आत्मविश्वास के लिए जानी जाती है। इसे लेकर ओक द लेक और कीवन मछली भी कहते हैं। मछली की मृत्यु 27 साल पूरे करने हुई लेकिन इससे पहले उसने सचिवालय और रथवान्यर नेहरू नामांकन पार्क में बाह्य की आवादी को फिर से बढ़ाने में आहम रूल आदा किया। फिल्म मछली के सुनहरे दिनों से लेकर उसकी मृत्यु तक के सफर की दिखाई है, सुनाती है मछली की सत्ता के पीछे की अपनी कहानियों, उसके पतन की दर्शाता और यो राष्ट्रीय विरासत के मृत्यु से जो यो मानने पीछे छोड़ गई।

Synopsis - Machli, the legendary Tiger Queen of Ranthambore National Park in Western India, was known for her fierce determination, bravery and confidence. Also known as 'Queen Machli' and 'Lady of the Lake', Machli died at the record age of 27 years but not before she had played a key role in the regeneration of tiger population in the Ranthambore and Sariska National Park. This film chronicles Machli's journey from her prime to her death; telling the incredible stories behind Machli's rise to power, her heartbreaking descent and the extraordinary legacy she left behind.

परिचय

नल्ला मुख्तु (Subbiah Nallamuthu)

Subbiah Nallamuthu is a leading wildlife filmmaker specialising in tiger-centric films. A cinematographer from FTT, Chennai, he has also worked as cameraman with ISRO and Films Division.

PROFILE

नैच्युरल हिस्ट्री यूनिट इंडिया (Natural History Unit India)

नैच्युरल हिस्ट्री यूनिट इंडिया - एक निर्माण कंपनी है जो विविध तौर पर वर्तमान आधुनिक वृत्तचित्र और सुट्टेज पर ध्यान केंद्रित करती है। 2001 में स्थापित हुई यह कंपनी भारत के विविध भू-माता, संसार और अपनी विविधता को संचालित करने वाली कंपनी है।

Natural History Unit India (NHUI) is a production house focusing exclusively on wildlife documentaries and footage. Set up in 2001, its aim is to explore India’s varied terrain, rich and unique wildlife and bring its incredible stories to the television viewing audience.

श्रेणी - प्रकृति के चक्र को प्रदर्शित, राणामूर्ति राष्ट्रीय उद्यान से महान बाय मछली की जन्म से मृत्यु की अद्वितीय गरीब दर्शाता।

Citation - For capturing the life and extraordinary legacy of Machli, the erstwhile Queen of Ranthambore and her part in regenerating tiger population that helps keep the forest alive.
ताला ते कुंजी
सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म

Taala Te Kunjee | Best Film of Social Issues

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Synopsis - Five recovering addicts at a rehabilitation center in Punjab, India, are helping families recover from the rampant drug problem in the state. While they struggle to establish new relationships with their pasts, their wives strive to redefine the meaning of love. An intimate portrayal of recovery, 'Taala Te Kunjee' is about relationships and the labor of everyday.

Shilpi Gulati

Shilpi Gulati is a documentary filmmaker and cinema scholar based in New Delhi. Her film 'Qissa-e Pari' won her the National Film Award for the Best Ethnographic Film of 2014. Her independent projects 'Dere tun Dilli' (2012) and 'Inside Out' (2010) have been screened at various festivals internationally. She is currently pursuing her PhD in Cinema Studies from Jawaharlal Nehru University. Her body of work largely engages with gender, identity and oral narratives of regional communities in India.

Simardeep Singh

Simardeep Singh has made a humble attempt to highlight drug epidemic in Punjab with 'Taala Te Kunjee' as the producer. For him, the film is next in line in a series of contributions that resonate with his family’s vision to rid the land of five rivers of rampant drug abuse.

Citation - For empathetically shining a light on the recovery of addicts and the role of loved ones, while quietly yet potently depicting the destruction that substance abuse brings to home and family.
Sarala Virala | Best Educational Film

राजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Kannada | 57 Mins | Director, Cinematographer & Editor: Ere Gowda | Production Company: Sujatha H.R
Synopsis - The film is an insight into the life of L. Narayana Reddy, an octogenarian organic farmer and a simple man, who remained steadfast and true to his beliefs in the midst of awards, popularity, wealth, and the materialistic new-age lifestyle. He imparted knowledge about the environment-friendly agriculture gained from decades of practice to people from all walks of life. His farming methods, the knowledge he shares, and the simple lifestyle he leads is a stark contrast to the problem-laden modern farmer. It is this contrast that ‘Sarala Virala’ dwells upon, thus documenting a man of example for present-day society.

एरे गौड़ा (Ere Gowda)

Ере Говда is a Kannada film director known for his film ‘Balekemma’ (2018). He was also the screenwriter of the award-winning Kannada film ‘Thithi’ (2015).

PROFILE

सुजाथा एच. आर. (Sujatha H. R.)

Sujatha H. R. is a poet and a passionate writer. Her first essay collection ‘Neeli Moogina Nattu’ (Nose Ring of Neeli) and first poetry collection ‘Kaadu Jeda Mattu Baatu Koli Hoo’ (Wild Spider and Flower of Duck) caught the attention of discerning critics as well as the readers and won many awards including the State Academy Book Award. Her passion for experimentation has now turned to production of documentaries. ‘Sarala Virala’ is her first endeavour as a producer.

प्रशसित – ससल है वह व्यक्ति, जिसे जिसका व्यक्तित्व एक नारायण रेड्डी एक किसान जो आपने विकासों पर बढ़ोत्तर जीवन के लिए जोर प्रेषित करती शैक्षणिक कहानी वक्रता तरीके से सच्चा जीवन जीने की कला रिखती है।

Citation - For highlighting the fundamentals of organic living through the life of L. Narayana Reddy, whose simplicity, philosophy and knowledge is an example for others to follow, especially the young.
Swimming through the darkness | Best Film on Sports

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Bengali | 76 Min | Director: Supriyo Sen | Production Company: Perspective | Screenplay: Supriyo Sen | Editing: Saikat Sekharaswar Ray | Camera: Mrinmoy Mondal
KATHAKAL - A young paraplegic boy from a poor family, Kanai Chakraborty chooses the daring life of a swimmer instead of becoming a singer and begging for living. But his success in the sport couldn’t ensure him a job. Even at the age of 40, he has to continue swimming to retain a respectable identity. He participates in the world’s longest swimming competition and tames mighty river Ganges covering 81 kms! His success brings in temporary glory but Kanai’s uncanny knack for chasing uncertainty remains a constant as he falls in love with a married woman! The film chronicles the roller coaster journey of Kanai who constantly negotiates with destitution, desire and destiny while chasing his dream.

SYNOPSIS - Hailing from a poor family, a blind boy Kanai Chakraborty chooses the daring life of a swimmer instead of becoming a singer and begging for living. But his success in the sport couldn’t ensure him a job. Even at the age of 40, he has to continue swimming to retain a respectable identity. He participates in the world’s longest swimming competition and tames mighty river Ganges covering 81 kms! His success brings in temporary glory but Kanai’s uncanny knack for chasing uncertainty remains a constant as he falls in love with a married woman! The film chronicles the roller coaster journey of Kanai who constantly negotiates with destitution, desire and destiny while chasing his dream.

PROFILE

Supriyo Sen

Supriyo Sen, an independent documentary filmmaker who has directed documentaries like 'Way Back Home', 'Hope Dies Last in War', 'Wagah', 'Swimming Through The Darkness', etc.

He won three National Awards including one for the Best Documentary for 'Hope Dies Last in War'. He has also won 36 different international awards for his films in Berlin, Karlovy Vary, Bilbao, Krakow, Tampere, Hamburg, Uppsala, Munster, Huesca, Abu Dhabi, Damascus, Zagreb,IFFI(Goa), Rio-de-Janeiro, Parnu, Mumbai (MIF), etc.

Citation - For thoughtfully portraying the challenges and life quest of its visually impaired swimmer, as he indefatigably pursues his sport, his dreams and desires, through impeding darkness.
अमोलिः सर्वश्रेष्ठ खोजपरक फ़िल्म

Amoli | Best Investigative Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

**Synopsis** - Amoli, 15, suddenly goes missing from her home in the remote tea gardens of West Bengal, India. Like Amoli, a child goes missing every eight minutes in India. Where do these children go? What happens to them? ‘Amoli’ is the story of children who are trafficked and sold into commercial sex work. The film takes a look into the workings of this dark, nefarious trade and narrates the stories of some brave survivors who have been through hell and lived to share their harrowing tales.

---

**Jasmin Kaur and Avinash Roy**

*Jasmin Kaur & Avinash Roy*

Jasmin Kaur and Avinash Roy are independent filmmakers who produce and direct short films and documentaries under their banner Wanderlust Films. They have made films on varied range of issues like human trafficking, education, livelihood & grassroots empowerment.

---

**Kulchar Mashee (Culture Machine)**

Kulchar Mashee is an Indian film director. He has directed short films and documentaries. His filmography includes works on human trafficking, education, and grassroots empowerment.

---

**Citation** - For its gritty examination of why and how young girls are coerced into commercial sex work, destroying their lives and minds, and for depicting their courage to survive.
**Kharvas | Best Short Fiction Film**

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

**Marathi | 38 Mins | Director:** Aditya Suhas Jambhal | **Production Company:** Shree Mahalasa Productions Panda | **Screenplay:** Aditya Suhas Jambhal | **Editor:** Aditya Suhas Jambhale & Amogh Barve | **DOP:** Ravi Ranjan | **Cast:** Veena Jamkar, Sandesh Kulkarni, Swati Bowalekar, Dilia Desai, Ketan Jadhav, Vardhan Karnat, Purmina Naik, Madhukar Joshi, Gauri Karnat
Synopsis - Aasawari, who is a painter by profession, has just lost her girl child who was still born. Totally frustrated by the condolences visits, she withdraws to her ancestral house in a remote Kankan village. However, Aasawari’s struggle to overcome this trauma is met with ultimate revolt when she accidentally learns about a pregnant cow due to deliver soon in their own cowshed. (Khavvas is a sweet milk pudding made from cow colostrums, and is highly popular in western India).

परिचय

आदित्य सुहास जम्बहाळे (Aditya Suhas Jambhale)

आदित्य सुहास जम्बहाळे एक राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्मी विद्वान, निर्देशक और लेखक हैं जो जंतू सो तालाबुक रेखात है और वर्तमान में मुंबई में रहते हैं। उनकी पहली त्रुटि फिल्म आवा एक्टन ना (2016) ने 2017 में ईस्टर्न में रोनेलेन्ड के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार दिलाया था। इसके बाद 8 मराठी नाटक का निर्देशन एवं लेखन किया है जिसमें हिंदी/मराठी भेंट प्रमुख बंदे माहाम (2014), 4 एकल नाटक और फ़ुस्ताक कांवा भरे मुणालक (2017) शामिल हैं।

Aditya Suhas Jambhale is a National Award-winning Goan film/theatre director and writer, currently based in Mumbai (Maharashtra). His debut short fiction 'Aava Aktao Na? (2016) won the National Film Award for Best Direction in 2017. He has written and directed 8 Marathi plays including Hindi/Marathi mega drama "Vande Mataram" (2014), 4 One Act plays and adapted plays in Goan Konkani language. He is credited for writing and Directing. His debut appearance on screen was in Director Pan Nalin’s "Angry Indian Goddesses".

PROFIE

श्री महालसा प्रोडक्शन्स पॉंडा (Shree Mahalasa Productions Ponda)

श्री महालसा प्रोडक्शन्स पॉंडा, गोवा की एक निर्माण कंपनी है जिसे सूर्य तिग्रे, राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्मी विद्वान आदित्य सुहास जम्बहाळे ने 2016 में शुरू किया। यह फिल्म, अभिनेता और मराठी नाटक, एकल नाटक निर्माण का काम में संलग्न है। आवा एक्टन ना इसका पहला निर्माण है।

Shree Mahalasa Productions Ponda is a Goa-based production house founded by Aditya Suhas Jambhale in 2016. It has been producing films, documentaries, Marathi plays, One Act dramas, etc. ‘Aava Aktao Na?’ was its first production.

मान्यता - ऑफिसल का दूसरा जन्म दर दे आपको मना। अपने से संदर्भ, अपने से समाचार अपने ही अंदूंसंदर्भ में उपलब्ध एक अन्तिम रिकॉर्ड यह निर्माण कहाँ? - खरहाड़।

Citation - For its production, direction and powerful performances in engagingly telling the story of how the psyche may implode and then heal, through an unleashing of trauma.
चलो जीते हैं
पारिवारिक मूल्यों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म
Chalo Jeete Hain | Best Film on Family Values
रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

**Synopsis** - An impressionable boy is struck hard by a quote by Vivekanand – “Wahi jeete hain, jo doosro ke liye jeete hain”. On the quest for purpose of life, the boy tries to pursue what he can do for others in his small world. This film is about his first steps towards that journey.

---

**Profile**

**Sanjiv Vercava (Sundial Ventures)**

Sundial Ventures was started by Mahaveer Jain, with its first production ‘Dekh Indian Circus’ (2011) which won many international awards including four National Film Awards.

---

**Mangesh Hadawale**

Mangesh Hadawale is a film writer, director and ad filmmaker. His first film 'Tingya' (2008, Marathi) received huge commercial as well as critical acclaim. His second film 'Dekh Indian Circus' was in Hindi which received many national and international awards.

---

**Citation** - For highlighting, through its young protagonist, the humanitarian value of how one may live for others, beyond one’s own self.
Harish Shah (Harish Shah)

Harish Shah is a well-known producer and director in the Indian film industry. In a career of almost five decades, Shah’s films have covered many themes and genres in his films. Some of his include ‘Mere Jeevan Saathi’, ‘Zalzala’, ‘Jaal: The Trap’. Shah has an extensive profile and experience as a producer and has worked with super stars like Rajesh Khanna, Sanjeev Kumar, Rekha, Rishi Kapoor, Sunny Deol and Tabu.

Citation - For the tenor of the director’s indomitable spirit, even as throat cancer claims his voice.

Synopsis of the film at page no. 181
एकांत निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार
Ekant | Special Jury Award
राजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

नीरज सिंह (Neeraj Singh)

नीरज सिंह ने बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी से फाइन आर्ट्स (फिल्मिंग) की पढ़ाई की है जिसके बाद उन्होंने 2017 में पूर्वोर्ड आईआईसी से कला निर्देशन एवं प्रोडक्शन डिजाइन में डिलोमा हासिल किया। इन्होंने अपनी डिलोमा फिल्म के प्रति संकल्पनात्मक मनोबल को तैयार किया। इस फिल्म को बीडिंग फिल्म अकादमी के सम्मानित अंतर्राष्ट्रीय छात्र फिल्म एवं ब्लिडेड समारोह में सर्वश्रेष्ठ फिल्म में भी चुना गया।

Neeraj Singh studied Fine Arts (Filming) at Banaras Hindu University, followed by a Diploma in Art Direction and Production Design from Film and Television Institute of India (FTII), Pune in 2017. He undertook development of conceptual design for his diploma film 'Ekant', which was selected at Beijing Film Academy’s prestigious International Student Film & Video Festival (ISFVF) in China and also in Tbilisi International Students Short Film Festival.

प्रशिक्षण — मानवीय सत्येन्द्रनाथ और भौतिक जीवन के हंगाम में कोई स्पष्ट पर्याप्त भूमिका के कहानी को स्पष्ट रूप से मात्र प्रभाव से दर्शाता है। जिसे कला विद्यादर्शक ने कूचलता से सृजित किया है।

Citation - For its surrealistic design and imagery of a bleak, impending catastrophe.
Gautam Vaze

Gautam Vaze, a computer science graduate, ventured into filmmaking 12 years back with Marathi TV serials. He has produced and line-produced more than 200 TVCs. He later became executive producer for few feature films for Ram Gopal Varma and Dharma Productions. ‘Aai Shappath’ is his directorial debut.

Citation - For its unpretentious execution and sensitive treatment of an anxious eight-year-old, gripped by the fear of a false promise.
The Secret Life of Frogs | Best Cinematography

राजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

English | 54 Mins | Directors: Ajay Bedi, Vijay Bedi | Production Company: Bedi Universal | Cast: Jeff Alan Greenway

अजय बेदी और विजय बेदी (Ajay Bedi & Vijay Bedi)

व्यक्तिगत विज्ञापन की शीर्ष फैडरी से हैं। ये सबसे पुराने एशियाई हैं जिन्होंने अपनी फिल्म 'दी पोलिसिंग लंगूर' और 'शेस्ब ऑफ दि मिस्ट' के लिए वाइल्डस्क्रीन अवार्ड्स (ग्रीन ऑस्कर) जीता है।

Ajay Bedi & Vijay Bedi

The third generation of wildlife filmmakers. They are the youngest Asians to have won the Wildscreen Awards (Green Oscar) for their films: 'The Policing Langur' and 'Cherub of the Mist'.

प्रशिक्षण – कैमरे से प्रकृति के अन्दरें निश्चित करने की मूर्ति, मंदिरों के मंजिले के अन्दरें निश्चित करने के दार्शनिक (181)

Citation - For its consistent, relentless and splendid work in formidable circumstances, of visually capturing the life cycle and habitat of an endangered amphibian.

Synopsis of the film at page no. 181
The Secret Life of Frogs | Best On-Location Sound

राजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

English | 54 Mins | Directors: Ajay Bedi, Vijay Bedi | Production Company: Bedi Universal | Cast: Jeff Alan Greenway

Ajay Bedi

Ajay Bedi is a second generation wildlife filmmaker and has worked extensively on films such as ‘The Policing Langur’ and ‘Cherub of the Mist’.

Citation - For uniformly capturing the delicate sounds of its tiny protagonists and of the wild and unpredictable environs they inhabit.
Children of the Soil | Best Audiography

रजत कमल | RAJAT KAMAL र 50,000/-


बिर्बदीय दीपक चटर्जी

बिर्बदीय दीपक चटर्जी एक दिगम्बर साउंड डिजाइनर रहे जिन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार जीता है। उनकी सुरक्षित फिल्मों में परिशिष्ट (2005), लंगे रोहो मुम्मा माई (2006), एकल (2007), मद्रास कीचेन (2013), पीकू (2015) और अल्मूर्त (2018) शामिल हैं।

हेमंती सरकार


Hemantti Sarkar


प्रस्ताव - जो कारीगर थे कनिसे, अब मुख्य नहीं हैं। जिन्होंने करी घोटा का गला, आज वह एंड है आगाज। दुलियां को गोलां, जिन्हें देखा हैं, हर दिनियां का संपादित करतीं... समाजीय कुटुंबियों के बिना बच्चों की कहानी।

Citation - For its powerful portrayal of the mindset and effects of female infanticide, one of the country’s most heinous mass crimes, and for portraying the courage of those who stand to fight against it where it is most prevalent.

Synopsis of the film at page no. 181
ज्योति 
सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन

Jyoti | Best Music

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-


केदार अच्युत दिवेकर (Kedar Achyut Divekar)
केदार अच्युत दिवेकर ने मराठी फ़िल्म के लिए संगीत निर्माण किया, इनकी फिल्मों में दांगली मुला (2010), विश्नुपंत दामले—दि हीरो ऑफ टॉक्शीज, एक डॉक्स्यूमेंट्री जिसने 2010 में रजत कमल हासिल किया।

Kedar Achyut Divekar has composed music for the Marathi feature film ‘Dandgi Mula’ (2010); ‘Vishnupant Damle - The hero of Talkies’, a docudrama which won the Rajat Kamal in 2010’ and background score and four songs for blockbuster Marathi film ‘Farzand’. He has composed background score for movies like ‘Zenda Swabhimanacha’, ‘Jyoti’, and a single-shot 81 minutes Kankani movie ‘Mahaprayan’; and also a few audio book series.

प्रशस्ति – कथा शिखा की अलख जगाती, दृष्टि और पराच्योक्ति का उल्लक्ष संगोष्ठ। शांत जीवन में संगीत के रंग भर उससे नये मायने देने का प्रयास करती फिल्म।

Citation - For its use of folk and traditional verse and music to suitably build on this 19th century tale of women's education.

Synopsis of the film at page no. 180
Madhubani—The Station Of Colours / Best Narration/Voice Over

उरविजा उपाध्याय, दीपक अग्निहोत्री (Urvija Upadhyay, Deepak Agnihotri)

उरविजा उपाध्याय एक वॉइस ओवर आर्टिस्ट है, इस्लामी के बड़े ब्रांड ब्लाइडस जैसे निसान, जॉनसन एंड जॉनसन, पेटीएम, रोसा, फिजर, कैल्नरी, डुकाबईज इत्यादि के लिए आवाज दी है।

दीपक अग्निहोत्री 18 साल से वॉइस ओवर, वीडियो फिल्म, एडिटिंग, कंप्यूटर ग्राफिक्स, ड्रिंग और साउंड—वीडियो एडिटिंग कर रहे हैं।

Urvija Upadhyay is a voice over artist. She has voiced for many big brand end clients like, Nissan, Johnson & Johnson, Paytm, Rastas, Fizer, Cadbury, Woodwards etc.

Deepak Agnihotri has been doing voice over, video film editing, computer graphics, dubbing and sound/video editing for about 18 years. e-corporate events/shows as background voice over for companies like Google for India, FIAT, Samsung, Asus, etc.

Synopsis of the film at page no. 180

176 | NON-FEATURE FILMS
Mahan Hutatma

विशेष उल्लेख

Mahaan Hutatma | Special Mention

प्रशर्ति पत्र | CERTIFICATE


Sagar Puranik (Sagar Puranik)

Sagar Puranik is an independent filmmaker and actor. He runs his own production house called Puranik Productions which produces web series, short films, feature films and TV shows. A business graduate from Bengaluru, he started his career as a child actor. He went on to act in several TV shows and a couple of films, while simultaneously working as an assistant, associate and co-director for several documentaries, corporate films, TV and films.

Synopsis of the film at page no. 181

Citation - For portraying the power of the patriotic spirit, and infusing it across generations.
Glow Worm In A Jungle | Special Mention

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Marathi | 15 Mins | Director: Ramana Dumpala | Producer: Film & Television Institute of India | Editor: Fareeda Am | DOP: Ravishankar Krishna | Sound Designer: Naithik Mathew Eappen | Subject: Hema Sane

Ramana Dumpala (Ramana Dumpala)

Ramana Dumpala is a native of Srikkulam, Andhra Pradesh. He started his filmmaking journey from Hyderabad, where he worked in the Telugu film industry as an associate writer for two feature films. After that, he studied both editing and direction at Film and Television Institute of India, Pune.

Citation - For the Director’s amazing find and crisp portrayal of Hema Sane - author, philosopher and former professor - who lives unusually, without amenities, in the city.
लड्डूँ विशेष उल्लेख
Laddoo | Special Mention
प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE


किशोर साधवानी, समीर साधवानी (Kishor Sadhwani, Sameer Sadhwani)
किशोर साधवानी ने फिल्म और कमर्शियल का प्रशस्ति पत्र दिया था।
समीर साधवानी एक फिल्मकार है जिन्होंने फ़िल्म और कमर्शियल के निर्देशन के लिए अलग ही जुड़ता है।
दोनों ने फिल्मकर्ता इस्तेमाल का नाम से एक नायक दुप की संपत्ति की जड़ों नाटक का निर्माण होता है और अभिनेताओं को प्रशस्ति पत्र दिया जाता है।

Kishor Sadhwani directs films and commercials.
Sameer Sadhwani is a filmmaker with a passion for directing commercials and feature films.
Both of them founded ‘Theatrix’, a theatre group that produces plays and trains actors.

प्रशस्ति – सामाजिक सौहार्द की मिसाल पेश करती, बाल सुलभि मन के साधारण से कई जटिल समस्याओं को समाधान देती – लड्डू।
Citation - For enlivening religious harmony, through the innocent yet adamant questions of its seven-year-old protagonist.

Synopsis of the film at page no. 180
आई शापथ (Aai Shappathi)

आई साथ का सोहन खुदा है कि पूर्णी के दिन उसकी आदी और उनका बेटा उससे मिलने आ रहे हैं। लेकिन हालत तब उसके लिए अजीब हो जाती हैं जब उसकी मौसी का बेटा निवास अपनी मां की दूल्ही कर लेता है। सोहन की पूर्णी से अपनी मौसी की दिलचस्पी में ही बीत जाती है।

Soham, 8-year-old is delighted as his beloved aunt and cousin visit him over the weekend. Things start getting uneasy for him when his cousin Niran, takes a false swear on his mother. Little Soham falls into pit of worry and anxiety over the entire weekend that lasts a century in his mind worrying about the consequences of a false mother promise.

विद्या अफूल सौईल (Children of the Soil)

फिल्म मातृत्व के बच्चों के ज़िद को सवार करती है। यह दिन यह स्थानों के ज़िद के बच्चे को मदद करने के लिए घरों के बाहर जाते हैं। दिन भर उन्होंने लिया ताजा और जहाँ की स्खलन नहीं है वहाँ उन्होंने घरों के बच्चे को मदद करने के लिए जाते हैं।

Sculptures made of soil collected from the barren fields of farmers, are used to document the plight of Indian farmers over centuries, from glory to misery on the iron hand of urban industrialization. The film "Children of the Soil" is a thought provoking visual comment on events plaguing India's farmer community with its associated evils like starvation, debt trap, homelessness, deprivation, begging and urban migration to losing their very farmland that defines them.

ग्लोव्वोर्म इन द जंजली (Glowworm in the Jungle)

शैव-पुत्र के बीच अपने आप पुत्र के बुद्धि पैठ में जांचे लोग आपको निश्चित एक बार जो पेड़, तंगोड़ा, टेंटी और बहुत सारी किस्में की दिखाया है। इसमें रहती है एक बच्चे का जीवन में अन्य फूल पत्ते और फूलों को देखने की आवश्यकता है। यह दिन भर उन्हें जाँचे हैं जहां बच्चे के बाहर का सामने आता है।

In the midst of chaos, if you go to Bushwa Park, Pune, you will find a house surrounded by trees, birds, cats, dogs and lots and lots of books. In it, resides Hema Same, a retired botany professor and an established author. In this documentary, she shares a slice of her life with us talking about her philosophy, her love for plants and animals, her choice to live independently, and of course, her decision to not have used electricity ever in her life. A documentary on a strong woman who stood by her principles and which is sprinkled with doses of humor and wisdom.

झॊली (Jyoti)

19वीं सदी में, जब महिलाओं की जिंदगी को बात करने का समय आया था, महिलाओं की जिंदगी को बात करने का समय आया था, महिलाओं की जिंदगी को बात करने का समय आया था। महिलाओं की जिंदगी को बात करने का समय आया था।

In the 19th century, when women education was unthinkable in India, Jyoti Phule started a girls’ school in Pune in 1851. Savitribai Phule was the first principal of the school. The film captures the story of a father named Mahadu and his daughter Kaushi. The film documents the story of Mahadu’s struggle to enroll his daughter in the school. It is from here that the onwards journey of women education started.

लड़दू (Laddoo)

हिंदी शैली के मुदाबिक और एक जिंदगी के बारे में कहता है कि मुदाबिक की पूर्वपितामाता के अलावा जो उस्ते बच्चा जाता है वो पिता के जिवे से उस तक पहुँच गया है। लेकिन जात का बच्चा उस्ते पिता के बारे में नहीं जाता है। जो लेकर उस्ते मुदाबिक देखने वाली पूर्वपितामाता उसके बाद जिंदगी के दौरान लड़दू पत्र के रूप में वह अपनी निम्नी की जिंदगी को बचाने में सहयोग देती है।

As per Hindi rituals, it is believed an offering made to ancestors on their death anniversary reaches them through the Pandit. But a seven-year-old Rahul can’t understand how! He asks many pertinent questions – how do we know that the food actually reaches our ancestors? Why don’t we feed the Pandit everyday instead? Even as he struggles to understand this concept, he is entrusted with the task of delivering lunch to the Pandit on his grandfather’s death anniversary.

मधुबनी: द स्टेशन ऑफ़ कोलर्स (Madhubani: The station of Colours)

ये दीवार-द्वार मधुबनी की इतिहास के अंश मधुबनी के रेलवे स्टेशन के बच्चों को दिखाता है। 2015 में रेलवे स्टेशन के स्वच्छता स्कोर में, मधुबनी के रेलवे स्टेशन 400 से ग्रेटर टॉरंटो के पैसों में कभी दूसरे पादत्तीन रेलवे स्टेशन के बाद उनके आगरण को लेकर उसे 200 मिलियन इंटरनेट आकर्षण के साथ दिया जाता और उनसे स्टेशन की दीवार आकर्षण के पेंट करने के लिए, आगरण किया। मधुबनी की दीवार के रेलवे स्टेशन के साथ इस स्टेशन में अपनी स्वच्छता,
सुदर्शन और मध्यम को लेकर सारी पुनिया में सुरंगियों बदलीं। 2016 के रंगमंच का सर्वाधिक में वे दो सर्वश्रेष्ठ रेटिनों में शुरू कर दी। वे फिल्म इस सीमांतें क्रोकेट के स्थायी मिश्रित पैंट प्रयोग की जरूरतें और आदर्शवाद का वृद्धि करता है।

This docu-drama showcases the transformation of Madhubani railway station brought about by using Mithila Paintings. In the 2015 Cleanliness Survey of Railway Stations, the Madhubani station ranked lowest among the 400 other stations. This prompted the Divisional Rail Manager (DRM) of Samastipur to undertake a mission of its transformation. He invited around 200 Mithila Painting artists and requested them to paint the walls of the station. With Mithila Paintings on its walls, the station made news all over the world for its grandeur, beauty and cleanliness. It featured among the top two stations in the 2018 Cleanliness Survey of Stations. The movie also chronicles the history and importance of Mithila Painting via this beautification project.

महान हुतात्मा (Mahaan Hutaatma)

ये लघु फिल्म बताती है कि किसान तरह एक बुजुर्ग आदमी अपने सैनिक प्रेटे महान्य की माँ की खबर का अपने पूरे जिवन को भर्तर सिंह की प्रेमगाँधी कहानी के परियों सुनता है। इस कहानी अपने पिता की शहदत की खबर को फिर से लेता है यहां महान हुतात्मा की कहानी का निदेशक है।

This short film is about how an elderly man conveys the news of the death of his soldier son, Bharath, to his grandson, Vijay, through the motivational story of Bhagat Singh. How Vijay receives the news of his martyred father, is Mahaan Hutaatma.

द सीरीज़ लैक्क ऑफ़ फ्रॉग्स (The Secret Life of Frogs)

‘द सीरीज़ लैक्क ऑफ़ फ्रॉग्स’ भारत के जलप्रपातों पर स्मृति प्रताप गांधी के जीवन की कहानी पर व्यावहारिक रूप से शुरू की गई, जिसे हजारों दुर्गम वनस्पतियों और जीवों का ध्यान आ रहे हैं। इस फिल्म के संगठन की अनूठी प्राकृतिक प्रतिक्रियाओं को दिखाना है तैनात अभियान में मानिक यूनियन ने अपने जीवविज्ञान कौशल्यों का उपयोग किया। यह दो प्रकार हैं, जिनमें एक में उन्होंने इन जलप्रपातों को देखा और दो रूपों के लिये आयोजित किया गया। इसे देखते हुए उन्होंने कहा कि यह खूब प्रेरणादायक है और अपने लायक वैज्ञानिकों को श्रद्धांजलि देता है।

‘The Secret Life of Frogs’ is the first-ever film on Amphibians of India. The film, shot extensively in the fragile Western Ghats which is home to thousands of rare flora and fauna, showcases unique species of frogs like the purple frogs which are critically endangered and require immediate protection. It’s a platform that every amphibian expert is aware of and is believed to have co-existed with dinosaurs. If any effort at all is to be put into conservation it has to go towards the Purple frog, which can be the ideal ambassador for the ecosystem that makes up the Western Ghats.

सन राजस (Son Rise)

लड़की-लड़की के बीच शियालदवा में भारी जंतु को लेकर बच्चा हरियाणा में जीवन के विवाह अवसर में बढ़ती है तो लेकिन सब कुछ खरा नहीं हुआ है। अर्भा ही कुछ यह फिल्म बताती है कि फिल्म के अंतर्गत एक समस्या रहने वाली व्यक्तियों को अपने और जीवन के समस्याओं का लड़कर। यह एक अनुभविक संगीतकार का गायक तथा राजनीतिक कार्यकर्ता के रूप में जगह परेंद्र का दर्शावत है भिन्नताओं के बीच संयुक्त हो जाने का दृष्टिकोण है।

The infamous skewed girl-boy sex-ratio in Haryana may have resulted in an unprecedented rise in crimes against women. However, all may not be lost, as this film follows ‘ordinary’ men doing the ‘extraordinary’ work in their struggle for women’s rights and gender justice. From a forward-thinking village chief and father of two daughters, fighting for women to enter the male-dominated arena of local-politics, to a farmer who, in an arranged marriage, defies society by marrying a gang rape survivor. Can these glimmers be the rays of hope we have been looking for?

वाय मी? (Why me?)

ये फिल्म दौड़ शह में नातीदारों के एक सच्चे घटना से शुरू करती है। जो एक फिल्म निर्माता और निर्देशक है। जो गटे के बीच से चोटिल हुए और यह उनके बाहर भी निकलते। इस फिल्म इसके श्रृः भूमि से बहादू लड़की की कहानी है। छत्रपति शाह ने इस फिल्म को रूपांतरण किया और भूमित्य किया।

This film is inspired by the true incident of the life of Mr. Harish Shah who by profession is a film producer director and suffered terribly from throat cancer and its about his journey as in how he fought against it. Mr. Harish Shah himself acted and directed it.
The awards aim at encouraging study and appreciation of cinema as an art form and dissemination of information and critical appreciation of this art form through publication of books, articles, reviews, etc.
मौन प्रार्थना पोल
सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तक
Mouna Prartha Pole | Best Book On Cinema
स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 75,000/-
**About the Author**

**स्याजचंद्रन नैर**

*S. Jayachandran Nair* was a respected editor and companion of Aravindan during his heydays, pens almost a painting of Aravindan - right from his childhood, to the days when the director was known for his paintings and cartoon strips published in the esteemed Malayalam magazine, 'Mathrubhumi Weekly', to his eventual transformation into a legendary film director. Peppered with quotes, comments and observations from influential literary and cultural figures of the times, the book goes in-depth to study his movies scene-by-scene. In a true reportage style, it also gets to hitherto known behind-the-scenes stories of Aravindan's movies. Written in a plain, simple style, the book is also a record of Aravindan's influential engagement with the literary and cultural world of Kerala. The author has brought out with deep humanism, how Aravindan's films depict the empathy intrinsic to human life. The book describes the movies as a panorama of emotions, and a treasure trove of memories.

**Kerala State Chalachitra Academy**

*Kerala State Chalachitra Academy* was set up by the Government of Kerala in August, 1998. The core objectives of the Academy include: being a link between the Government and the film industry, the conducting of Film Festivals all over the state, the preservation and propagation of Malayalam Cinema, to intervene in film education, to document the history of Malayalam Cinema.
**In a Cult of Their Own: Bollywood Beyond Box Office | Special Mention**

**Prashant Patra | CERTIFICATE**

**Amborish Roychoudhury** takes considerable (albeit somewhat misplaced) pride in calling himself a Film Buff. Ever since he can remember, he has been obsessing about cinema of all kinds, with a pronounced bias for Hindi cinema. Amborish has spent nearly a decade in financial services and about half a decade in the digital marketing industry, selling his wares. He lives with his wife in Mumbai.

**Rupa Publications**, which began its journey more than 80 years ago, is one of India’s largest book publishers and distributors.

**Citation** - *In a Cult of Their Own: Bollywood Beyond Box Office*, by Amborish Roychoudhury is a unique look at various genres of Hindi cinema that fuses the serious with the tongue in cheek. The author fluidly writes on some of the cult films, including some which have acquired their legendary status because of reasons other than cinematic. This book is a fine example of how cinema criticism can transcend quality or the lack of it in cinema itself.
Blais Johny

Blais Johny is a doctoral research scholar in the School of English & Foreign Languages, The Gandhigram Rural Institute, Tamil Nadu. His areas of academic and research interests include film studies, cultural studies and popular culture. He has contributed several scholarly articles on film studies to various academic journals, magazines and online portals in English and Malayalam. He received the Kerala State Film Award for the Best Article on Cinema in 2018. Also, he bagged the Kerala Film Critics Association Award for the Best Article on Cinema in 2017 & 2018. He is co-editing a book on Cultural Studies and is a practicing translator.

Citation - The critic has written on a wide range of subjects, ranging from impact of identity & caste politics on cinema to the influence and importance of trailers, especially in the context of Tamil and Malayalam cinema. His in depth writing is well researched yet presented in a manner comprehensible to everyone.
Anant Vijay, currently with the Dainik Jagran, is a senior journalist, columnist and author with more than two decades of journalistic experience. His Sunday column in Dainik Jagran on Cinema, art and culture is widely read. He is writing this column for the last 10 years. He has written 10 books across various genres and is the author of the bestselling book ‘Bollywood Selfie’. Anant Vijay is the only author in Hindi who regularly writes on foreign languages books. His latest book is ‘Marwada ka Ardhshatya’, which has created an alternative narrative in literary circles. Currently, he is working on a book, ‘Superstar Selfie’ on legends of Hindi Cinema. He lives in Indirapuram, Ghaziabad with his wife and daughter.

**Citation** - His writing is well researched, embellished with anecdotes and is easy to read. His understanding of the contemporary socio-political nuances of Hindi cinema is reflected in his articles.
A state government that makes dedicated effort in the direction of facilitating film shootings, and in creating a conducive environment towards promotion of Indian Cinema shall be eligible for the award for ‘Most Film-Friendly State’.
राजस्थान (Uttarakhand)

सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म अनुकूल राज्य
Most Film-Friendly State

रजत कमल एवं प्रशस्ति पत्र
Rajat Kamal & Certificate

प्रशस्ति (Citation)

राजस्थान के तौर पर फ़िल्म उद्योग को आगे बढ़ाने के लिए, जिसमें राज्य का फ़िल्म निर्माण के लिए सहाय गहराई तैयार करना शामिल है, दुनिया और कला के विकास के लिए प्रोत्साहन, बंद पड़े सिनेमा हॉल को फिर से खोलने के लिए प्रोत्साहित करने, फ़िल्म विकास कोष का निर्माण, फ़िल्म निर्माण के लिए पहले से प्रोत्साहन देने की योजना जारी रखने, अन्य सक्रिय भागीदारियों के अलावा उत्तराखंड फ़िल्म विकास समिति का निर्माण

For furthering the growth of the film industry in the State by creating an environment for ease of filming in the State, encouraging skill/talent development, incentivising the re-opening of closed cinema halls, formation of film development fund, continuing with the earlier incentive plan for filming and formation of Uttarakhand Film Development Council among other pro-active initiatives.
Directorate of Film Festivals Team

K. Prashant Kumar, Deputy Director, DFF
Gulshan Rai Juneja, Deputy Director, Accounts
Ankur Lahoty, Assist. Director, DFF
Mukesh Chand, Official
V.K. Sharma, Official
Vinod Kumar Bassi, Official
Gautam Singh, Official
Deepthi A.S., Official
Ganesh Chand, Official
Chiranji Lal Meena, Official
Roshan Vats, Official
Devendra Prasad, Official
Chandi Prasad, Official
Kailash Kumar, Official
Amit Kumar, Official
Surinder Kumar, Official
Mahesh Chand, Official
Praveen Kumar Chawla, Official
Govind Ram, Official
Sushant Shrotriya, Unit Manager
Rajendra Kumar, Official
Deepu Choudhary, Official
Abhinay, Technical Assistant

Projection and Technical Supervision, Siri Fort Auditorium and Fil Division

S.K. Rohilla, Asstt. Engineer (Civil)
Mahipal Saini, Asstt. Engineer (Elect.)
Ashok Hitaiishi, Fil Division

ACKNOWLEDGEMENTS

Film Producers/Production Houses for providing the film-related material Photographs of Past DSPA Winners:
National Film Archives of India, Pune (Government of India)
Films Division for DSPA and Doordarshan News for National Award Winners Audio Visual presentation